www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

# महाकाल की चेतावनी

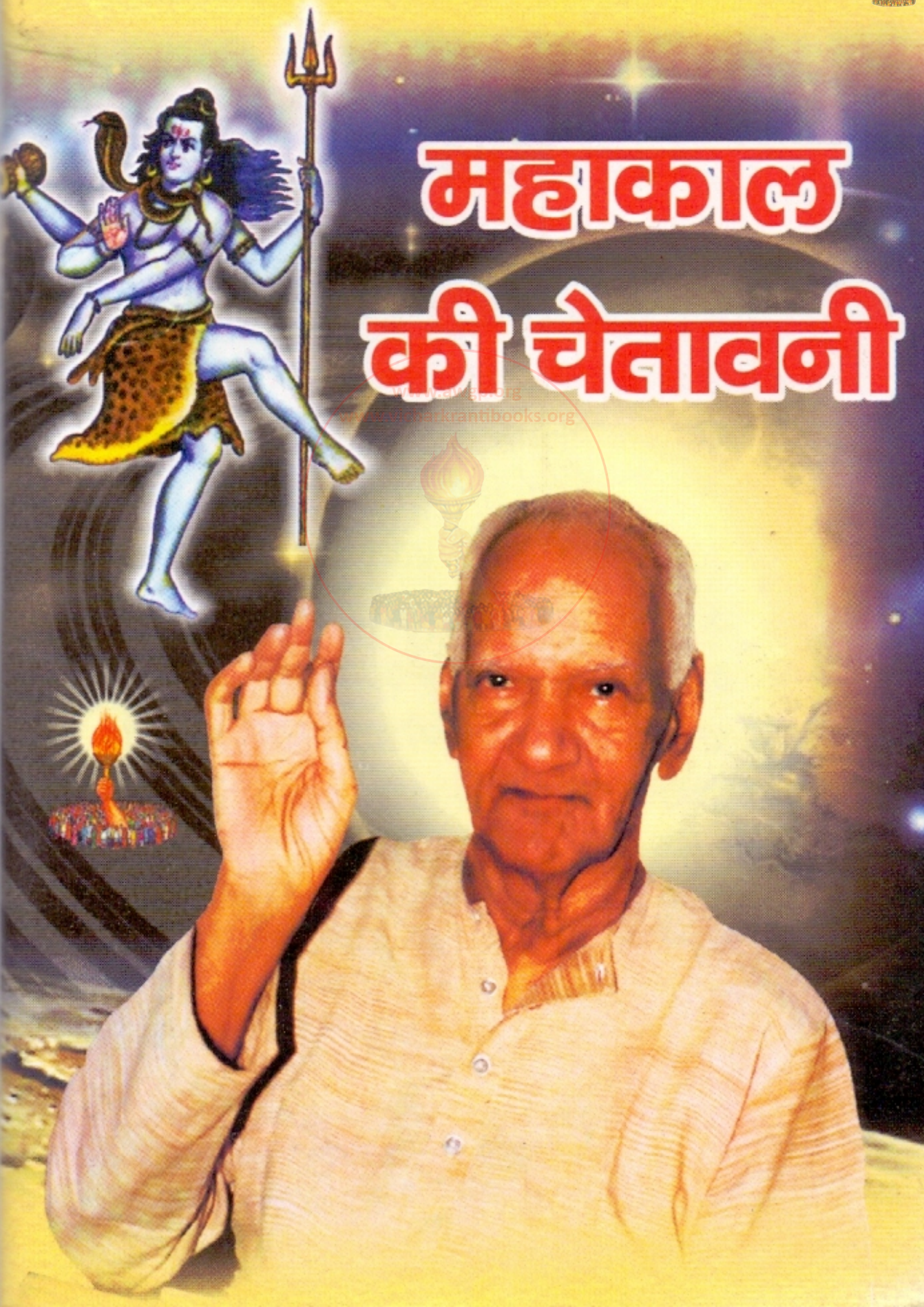

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

## यह आत्मावलोकन का समय

वर्तमान समय में क्षेत्रों में एवं हम सभी कार्यकर्ताओं की अंतरात्मा में उथल-पुथल, आपसी मनोमालिन्य बढ़ते जा रहे हैं । गुरुदेव की आकांक्षा के अनुसार मिशन के कार्यक्रम आपसी सामंजस्य से युद्ध स्तर पर मिशन के पाँच संस्थानों से एक रूपता के साथ चलना आवश्यक है ताकि क्षेत्रीय कार्यकर्ता असमंजस में न रहें और युग परिवर्तन की संधि बेला में हम सभी पूज्य गुरुदेव के द्वारा सौंपे गए महान उत्तरदायित्वों का पालन करने में सफल हो सकें । इसके लिए हम सभी को पूज्य गुरुदेव के निम्नलिखित विचारों का गंभीरता से आत्म चिंतन करके आचरण में लाने का हर संभव प्रयास करना चाहिए । जहाँ अपनी गलतियाँ हों, उन्हें दूर करके समर्पण भाव से, आपसी प्यार-सहकार से कर्तव्य पालन में जुट जाना चाहिए । तभी हम सभी पूज्य गुरुदेव की कृपा से अपने जीवन को सार्थक बनाने में सफल हो सकेंगे एवं युग परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह समय अपनी समीक्षा करने का है । यदि हमने अपनी समीक्षा नहीं की, तो समाज हमारी समीक्षा करेगा । पूज्य गुरुदेव की महानता को तो क्या आँच आएगी लेकिन लोग यही कहेंगे कि इनका गुरु तो बहुत महान था, शिष्यों ने अपने गुरु के नाम पर बट्टा लगाया । यह आत्म प्रताड़ना हमें कहीं का नहीं छोड़ेगी । समय रहते बदला जाए, यही उचित है ।

हमारा सभी भाई–बहिनों से विशेष अनुरोध है कि इस पुस्तक को मिशन के सभी भाई–बहिनों को अवश्य पढ़ाने का प्रयास करें । एक–दूसरे से पूछें कि आपने 'महाकाल की चेतावनी' पुस्तक पढ़ी या नहीं । यदि नहीं, तो अवश्य पढ़ें । सभी शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, प्रज्ञा मंडल, शाखाएँ, विद्या विस्तार केंद्र, ज्ञानयज्ञ प्रचारक एवं ज्ञानयज्ञ सहयोगी इस पुस्तक को अधिकाधिक मँगाकर मिशन के प्रत्येक भाई–बहिन तक अवश्य पहुँचाने का प्रयास करें । माता गायत्री हम सबको सद्बुद्धि दे ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अखंड ज्योति, फरवरी १९९८ में लिखा है –

पूज्य गुरुदेव ने अपने पत्र में १९८२ के वर्ष के अंतिम दौरे के क्षणों में बड़े व्यथित हृदय से लिखा था कि–

''अब बड़े व्यापक स्तर पर साधनों के निर्माण का समय आ गया है । हमारे हृदय के टुकड़ों के समान प्रिय ये कार्यकर्त्ता जब अपनी साधना को भूलकर लोक सम्मान व यश अर्जन हेतु मेरे चारों ओर भीड़ लगाते दीखते हैं तो मुझे क्लेश होता है । मैं तो चाहता था कि इन शक्तिपीठों के माध्यम से संगठन का मूल ढाँचा खड़ा हो, किंतु अब जब संधि वेला की एक–एक घड़ी भारी पड़ रही है, तब मैं खिन्नता मन में लिए अपने इस दौरे से लौटूँगा ताकि कुछ नवीन जो किया जाना चाहिए उस पर तुम सबसे विचार विमर्श कर सकूँ । प्रज्ञा अवतार की सत्ता के मन की वेदना क्या हो सकती थी आज हर कोई समझ



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकता है ।( क्या काफिला बिछड़ जाएगा ? मलाई को तैर कर ऊपर आने का आमंत्रण अखंड ज्योति, अप्रैल १९९२ में प्रकाशित हुए हैं ।)

उपरोक्त प्रसंग आज की वेला में यही सोचकर दिया गया कि कहीं वही अवसाद, मतिभ्रम, आत्म सम्मोहन हम सभी के ऊपर हावी तो नहीं हो रहा, जिसने गुरुसत्ता को व्यथित किया था व वे लिखने को विवश हो गए थे । कुछ समझ में नहीं आता ? यह समय पराक्रम और पौरुष का है, शौर्य एवं साहस का है ।

वरिष्ठों, विशिष्टों, विशेषज्ञों के काफिले को बचकानी हरकतें करते युग ऋषि ने देखा व वैसा कुछ लिखकर अपनी अंतर्वेदना व्यक्त की तो इसे अन्यथा नहीं लिया जाना चाहिए । उन्होंने लिखा **''वरिष्ठ गिरेंगे तो फिर बचेगा क्या ? सूरज डूबेगा तो सघन तमिस्रा**



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के अतिरिक्त और कहीं कुछ रहेगा क्या ?''

अखंड ज्योति, जुलाई ९८ में लिखा है –

आप यदि यह चाहते हैं कि आप सम्मानित व्यक्ति ठहराए जाएँ, आपकी प्रशंसा हो, सभी आपको आदर दें तो आदरणीय पुरुषों का आपको अध्ययन करना होगा । जिन गुणों के आधार पर लोग आदर के पात्र गिने जाते हैं, उनका अनुकरण करेंगे तो आपका गौरव भी जागृत होगा और बड़प्पन मिलेगा, किंतु यदि आप बाहरी टीपटाप के द्वारा लोगों को भ्रम में डालकर सम्मान प्राप्त करने की कामना करेंगे तो मँहगा मोल चुकाकर भी आपके हाथ कुछ न आएगा । धूर्त व्यक्ति अपनी चालाकियों से कुछ देर के लिए बड़ी–बड़ी बातें बनाकर, धन का अभिमान जताकर, रूप–गुण की झूठी प्रदर्शनी लगा कर कुछ थोड़ा सा सम्मान प्राप्त भी कर ले तो वह आंतरिक उल्लास नहीं मिल सकेगा जो



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिलना चाहिए था । उल्टे जब इस नाटक का पर्दाफास होता है तो लोग धूर्त और पाखंडी ठहराकर तरह–तरह से भर्त्सना, उपहास और निंदा करते हैं । कागज की नाव कब तक चलती, उसे डूबना ही था । धूर्तता की जालसाजी का पर्दा खुल जाता है तो भारी अशांति होती है । सम्मान तो मिलता नहीं, अपमान ही भोगना होता है ।

**अखंड ज्योति, मई १९९७ में लिखा है –**

देव परिकर के सदस्यों के लिए यह आत्मावलोकन, आत्म–चिंतन एवं आत्म–मंथन का समय है । नव सृजन के ये जुझारू सैनिक वे चाहे गायत्री तपोभूमि, शांतिकुंज एवं ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान के कार्यकत्ताओं के रूप में अग्रिम पंक्ति में खड़े हों अथवा फिर अपने–अपने क्षेत्रों में नव निर्माण के लिए जूझ रहे कर्मठ सेनानी हो । अपने परिजनों को गायत्री परिवार के सदस्यों को यह लड़ाई



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर लड़नी पड़ रही है । यही कारण है कि असुरता के कुचक्रों, कुटिल चालों, विनाशक आघातों का सबसे पहला निशाना वही बनते हैं ।

माया का आकर्षण एवं सम्मोहन बहुत ज्यादा है । सारा सद्ज्ञान एवं विवेक धरा का धरा रह जाता है । ज्ञानियों के लिए यह ज्ञान दंभ बनकर प्रकट होता है । **''मुझे तो सब मालूम है ।''** यह भाव भी अंतःकरण की विनम्रता, पवित्रता एवं पात्रता को नष्ट कर देता है । अज्ञानियों में इसका प्रकटीकरण अहं की प्रतिष्ठा बनकर होता है । **मैं भला क्यों झुकूँ मैं सर्वश्रेष्ठ, सबसे अधिक वरिष्ठ,** ये भाव हमारे और हमारे आराध्य के बीच विभाजन की दीवार बना देते हैं । हम उनकी शक्तियों से वंचित रह जाते हैं । प्रभु के सामीप्य का अभिमान भी हमें उनसे कोसों दूर ले जाता है ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

माया के जादू से हमारा अभिमान कभी तो कुछ साधन एवं सम्मान बटोर कर शीर्ष पर जा पहुँचाता है और कभी आहत होकर क्रुद्ध नाग की तरह फुँकार उठता है । गुस्से में उबलते हुए हम कहते लगते हैं **'आखिर क्या मिला हमारी दीर्घकालीन सेवाओं के बदले में ? क्या पाया हमने अपने भारी भरकम त्याग और बलिदान का पुरस्कार ?** कहते हुए भूल जाते हैं कि **''सच्चा त्यागी और बलिदानी पुरस्कार की माँग से बहुत ऊपर उठ जाता है । लेकिन अमुक को ढेर सारा सम्मान मिला और अनगिनत साधन सुविधाएँ, मेरी योग्यता क्या किसी से कम है ? क्या मेरा समर्पण उनसे थोड़ा भी कम है, इन सवालों को उठाते हुए क्या हम अपने ही समर्पणों का मजाक नहीं उड़ा देते?**

हम कुछ भी कहीं भी और कोई भी क्यों



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

न हों ? अपने चिंतन और कृत्य पर एक नजर डालकर देखें, कहीं हम असुरता के पक्षधर तो नहीं हो गए ? कहीं अपनी हठधर्मी में अपने ही नव सृजन अभियान को नुकसान तो नहीं पहुँचा रहे हैं, जिसे हम वर्षों से अपने रक्त प्रवाह, प्राण प्रवाह से सींचते आए हैं । संगठन अपने प्रभु का विराट शरीर है, पारस्परिक सहयोग एवं सहकार ही उनकी इस विराट मूर्ति की आराधना है । **तनिक आत्मावलोकन करके देखें कि कहीं हम अपने कृत्यों से अपने प्रभु के शरीर पर आघात तो नहीं कर रहे हैं ।**

जो लोग एक दूसरे की शिकायतें करते हैं, परस्पर दोषारोपण करते हैं उनके बारे में यही कहना पड़ेगा कि वे शायद असुरता के मायाचार में फँस गए हैं अन्यथा जिसे अगले ही तीन कदमों बाद विजय मिलने वाली है ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह भला कहीं ऐसे उलझता है । मनुष्य जिस कार्य को महत्व देता है, उसे सबसे पहिले स्थान पर रखता है । अहं की प्रतिष्ठा स्वार्थ का नजरिया इससे श्रद्धा एवं समर्पण से कोई वास्ता नहीं । नव निर्माण अभियान को यदि निरर्थक नहीं समझा गया है, उसके प्रति सच्ची श्रद्धा है तो फिर आपसी उलझनों के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं ।

हमारे अंतःकरण श्रद्धा एवं समर्पण के तत्वों से भरपूर हैं, इसकी कसौटी यही है कि हम अपनी संघबद्धता को और अधिक सशक्त करेंगे । आसुरी शक्तियों के मायावी जाल से बचेंगे । परस्पर दोषारोपण के स्थान पर पारस्परिक सहयोग, सौहार्द्र हमारी जीवन नीति बनेगी । अहं की प्रतिष्ठा के स्थान पर अहं का विसर्जन, विलय हमारा जीवन सिद्धांत होगा । महत्वाकांक्षा का स्थान समर्पित भावनाएँ लेंगी । स्वार्थपरता, सेवा



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भावना में बदलेगी ।

**असुरता के किसी कुचक्र एवं छद्म नीति के समक्ष न स्वयं घुटने टेकेंगे और नहीं दूसरों को ऐसा करने देंगे ।**

**अखंड ज्योति, अगस्त ७० में लिखा है –**

''बहुत पहले हम सोचते थे कि हमारे बहुत से साथी, अनुयायी, स्वजन और शिष्य हैं वे अपना सहज कर्तव्य समझेंगे और उस पुण्य परंपरा को उदार श्रद्धा के साथ सहज ही अग्रसर करते रहेंगे ।

अब ऐसा लगने लगा है कि जो विशाल भीड़ हमें चारों ओर से घेरे रही है, घेरे रहती है, उसके कम ही लोग उस स्तर के हैं जिन्हें हमारे प्रयासों के प्रति सच्ची सहानुभूति है । अधिकांश लोग निहित स्वार्थ वाले हैं, जो अपने किसी प्रयोजन विशेष में सहायता प्राप्त करने के लिए हमारा उपयोग भर करना चाहते हैं । बारीकी से अपने



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वर्तमान साथियों पर निगाह डालते हैं, तो खोखलापन बहुत नजर आता है । लगता है कि ढोल के इर्दगिर्द ही थोड़ी सी लकड़ी और चमड़ी लगी है भीतर तो पोल ही पोल है । भीड़ से क्या बनता है ?

सोचते हैं अपने साथ जुड़ा हुआ लाखों मनुष्यों का जनसमूह कहीं ऐसा ही खोखला न हो जो हमारे पीठ फेरते ही मुँह फेर ले और जिस प्रयोजन को हम विश्व–व्यापी बनाने के लिए अपने को तिल–तिल गलाते रहे हैं, वे उसकी ओर मुड़कर भी न देखें ।

हमारा परिवार यदि व्यक्तिगत संपर्क की परिधि तक ही सीमित रहा और हमारे मिशन के प्रति उसमें आवश्यक निष्ठा उत्पन्न न हुई, तो एक प्रकार से हमारे प्रयोजनों का मटियामेट हो जाएगा । भीड़ बढ़ा लेना और जन संपर्क फैला लेना, मिलनसारी या प्रतिभा का चमत्कार हो सकता है, पर उस



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समूह में कोई दम न रही तो बालू की दीवार की तरह उस भीड़ को बिखरने में भी देर न लगेगी और यदि कहीं ऐसा हो गया तो हमारी जीवन साधना की सार्थकता क्या रह जाएगी ?

**नवम्बर ७६ अखंड ज्योति में लिखा है–**

**''असत्य और दुराव का आश्रय लेकर ही यदि संगठन को जीवित रहना है तो अच्छा है वह हमारे सामने ही मर जाए । हमें संस्था संगठन से मोह नहीं, आदर्शों से प्यार है ।** विरोधी हमारी निंदा करें, इससे पहले हम अपनी निंदा आप कर लें, अपनी सदाशयता और अधिक प्रबल प्रमाण दे सकती है और आक्षेप करने वालों का मुँह बंद कर सकते हैं । इसके विरुद्ध यदि चुपचुप अनर्थ चलते रहे तो बात छिपती तो है नहीं, कानाफूँसी के रूप में वह अधिक भयंकर तथा घातक सिद्ध होगी ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अखंड ज्योति, नवम्बर ७६ में लिखा है–

**अनीति को देखते हुए भी चुप बैठे रहना, उपेक्षा करना, आँखों पर पर्दा डाल लेना जीवित–मृतक का चिह्न है ।** जो उसका समर्थन करते हैं वे प्रकारांतर से स्वयं ही दुष्कर्मकर्त्ता हैं । स्वयं न करना किंतु दूसरों के दुष्ट कार्यों में सहायता, समर्थन, प्रोत्साहन, पथ–प्रदर्शन करना एक प्रकार से पाप करना है । इन दोनों ही तरीकों से दुष्टता का अभिवर्धन होता है ।

मानवी साहसिकता और धर्म निष्ठा का तकाजा है कि जहाँ भी अनीति पनपती देखें वहाँ उसके उन्मूलन का प्रयत्न करें । यह न सोचें कि जब अपने ऊपर सीधी विपत्ति आएगी तभी उसे बुझाया जाए । इसकी अपेक्षा यह अधिक उत्तम है कि जहाँ भी आग लगी है वहाँ बुझाने को आत्म रक्षा का अग्रिम मोर्चा मानकर तुरंत विनाश से लड़ पड़ा जाए । यदि



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सीधे टकराने की सामर्थ्य अथवा स्थिति न हो तो कम से कम असहयोग एवं विरोध की दृष्टि से जितना कुछ बन पड़े उतना तो करना ही चाहिए । असुरता को निरस्त करने और देवत्व को बलिष्ठ बनाने के लिए हमें विरोधी रुख तो अपनाए ही रखना चाहिए ।

**श्रावणी पर्व १९८८ विशेष कार्यकर्त्ता गोष्ठी के प्रवचन में कहा था–**

अहं को गलाना, विसर्जन, समर्पण । जब तक अहंकार जिंदा है, आदमी दो कौड़ी का है । जिस दिन यह मिट जाएगा, आदमी बेशकीमती हो जाएगा । अहं ही है जिसके कारण न सिद्धांत न सेवा न आदर्श बन पाते हैं । व्यक्ति लोक सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करके भी उच्छृंखल स्तर का अनगढ़ बना रहता है ।

व्यक्ति को पहचानने की एक ही कसौटी है कि उसकी वाणी घटिया है या बढ़िया । व्याख्यान कला अलग है । मंच पर तो सभी



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शानदार मालूम पड़ते हैं । प्रत्यक्ष संपर्क में आते ही व्यक्ति नंगा हो जाता है । जो प्राण वाणी में हैं वही परस्पर चर्चा व्यवहार में परिलक्षित होता है । वाणी ही व्यक्ति का स्तर बतलाती है । व्यक्तित्व को बनाने के लिए वाणी की विनम्रता जरूरी है । **अनगढ़ता मिटाओ, दूसरों का सम्मान करना सीखो ।**

अपनी इच्छा, बड़प्पन, कामना, स्वाभिमान को गलाने का नाम समर्पण है । जिसे तुमसे करने को मैंने कहा–व इसकी अनंत फलश्रुतियाँ सुनाई हैं । अपनी इमेज विनम्र से विनम्र बनाओ । मैनेजर की, इंचार्ज की, बॉस की नहीं बल्कि स्वयंसेवक की । जो स्वयं सेवक जितना बड़ा है, वह उतना ही विनम्र है । उतना ही महान बनने के बीजांकुर उसमें हैं । तुम सब में मौजूद हैं । अहं की टकराहट बंद होते ही वे विकसित होना आंरभ हो जाएँगे । तुमने हमसे दीक्षा तो ली है, पर



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने अंदर टटोलो कि तुमने समर्पण किया कि नहीं ।

तुम सब हमारी भुजा बन जाओ, हमारे अंग बन जाओ, यह हमारेपन की बात है । **हमने अपनेपन की बात तुमसे कह दी । अब तुम पर निर्भर है कि तुम कितना हमारे को मानते हो ।**

समर्पण का अर्थ है दो का अस्तित्व मिटकर एक हो जाना । तुम भी अपना अस्तित्व मिटाकर हमारे साथ मिला दो व अपनी क्षुद्र महत्वाकांक्षाओं को हमारी अनंत आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाओं में विलीन कर दो, जिसका अहं जिंदा है, वह वेश्या है । जिसका अहं मिट गया वह देवता है । देखना है कि हमारी भुजा, आँख, मस्तिष्क बनने के लिए तुम कितना अपने अहं को गला पाते हो । इसके लिए निरहंकारी बनो । स्वाभिमानी तो होना चाहिए पर निरहंकारी बन कर । निरहंकारी का प्रथम चिह्न है वाणी की मिठास ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तुम्हीं को कुम्हार व तुम्हीं को चाक बनना है । हमने तो अनगढ़ सोना–चाँदी ढेरों लाकर रख दिया, तुम्हीं को साँचा बनाकर सही सिक्के ढालना है । सांचा सही होगा तो सिक्के भी ठीक आकार के बनेंगे । आज दुनिया में पार्टियाँ तो बहुत हैं पर किसी के पास कार्यकर्त्ता नहीं हैं । लेबर सबके पास है, पर समर्पित कार्यकर्त्ता जो सोचा बनता है, वह कई को बना देता है । अपने जैसा कहीं भी नहीं है । हमारी यह दिली ख्वाहिश है कि हम अपने पीछे कार्यकर्त्ता छोड़कर जाएँ । तुम सबसे अपेक्षा है कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे ।

पीले कपड़े पहनते हो कि नहीं पर मन को पीला कर लो, सेवा बुद्धि का दूसरों के प्रति पीड़ा का, भाव संवेदना का विकास करना ही साधुता को जगाना है । यही आत्मा की हमारी वाणी है । जो तुमसे कुछ करानी चाहती है । इतिहास में तुम्हें अमर देखना चाहती है ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देखना है कितना तुम हमारी बात को जीवन में उतार पाते हो ।

अपने अंग अवयवों से कुछ विशिष्ट अपेक्षाएँ– गुरुवर की धरोहर में लिखा है –

आपको वह काम करना चाहिए जो कि हमने किया है । हमने आस्था जगाई, श्रद्धा जगाई, निष्ठा जगाई । निष्ठा, श्रद्धा और आस्था किसके प्रति जगाई–व्यक्ति के ऊपर । व्यक्ति तो माध्यम होते हैं । वास्तव में सिद्धांतों के प्रति श्रद्धा होती है । आदर्शों के प्रति श्रद्धा। मूर्तियों के प्रति श्रद्धा देवताओं के प्रति श्रद्धा टिकाऊ नहीं होती । हमारी सिद्धांतों के प्रति निष्ठा रही । यदि सिद्धांतों के प्रति हम आस्थावान न हुए होते तो संभव है कि कितनी बार भटक गए होते और कहाँ से कहाँ चले गए होते और हवा का झोंका उड़ाकर हमको कहाँ ले गया होता । लोभों के झोंके, दबाव के झोंके ऐसे हैं कि आदमी को लंबी राह पर



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चलने के लिए मजबूर कर देते है और कहीं से कहीं घसीट ले जाते हैं । बहुत से व्यक्ति थे जो सिद्धांतवाद की राह पर चले और कहाँ से कहाँ जा पहुँचे । आप भटकना मत ।

यह मिशन हमने कितने परिश्रम से बनाया । कितना विस्तार इसका हो गया, कितना फैलाया, कितना विस्तार होता जाता है । बहुत बड़ा काम है । बहुत बड़ी योजना है । इस काम को हमने आरंभ किया लेकिन अब यह जिम्मेदारी हम आपके सुपुर्द करते हैं । हम तो अपनी विदाई ले जाएँगे, लेकिन जिम्मेदारी आपके पास आएगी । **आप कपूत निकलेंगे तो, तो फिर आदमी आपकी बहुत निंदा करेगा और हमारी बहुत निंदा करेगा ।**

कबीर का बच्चा ऐसा हुआ था जो कबीर के रास्ते पर चलता नहीं था तो सारी दुनिया ने उससे यह कहा–**''बूढ़ा वंश कबीर का उपजा पूत कमाल''** आपको



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कमाल कहा जाएगा और यह कहा जाएगा कि कबीर तो अच्छे आदमी थे लेकिन उनकी संतानें दो कौड़ी की भी नहीं हैं । आपको दो कौड़ी की संतानें पैदा नहीं करनी है । आपको इस धर्म का विस्तार, जो काम हम करते रहे हैं वह अकेले हमने नहीं किया, मिलजुल करके ढेरों आदमियों के सहयोग से किया है और यह सहयोग हमने प्यार से खींचे हैं, समझाकर खींचे हैं, आत्मीयता के आधार पर खींचे हैं । वे गुण आपके भीतर पैदा हो जाएँ तो जो आदमी आपके साथ–साथ काम करते रहते हैं, उनको भी मजबूत बनाए रहेंगे और नए आदमी जिनकी इससे आगे भी आवश्यकता पड़ेगी, अभी ढेरों आदमियों का आवश्यकता पड़ेगी । आपको संकल्प का नाम याद है । नया युग लाने का संकल्प । नया युग लाने का संकल्प हजारों आदमियों को काम है । जो काम हमने अपने जीवन में किया



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है वही काम आपको करना है ।

हम प्यार की रस्सी से बाँधे हुए हैं आत्मीयता की रस्सी से बाँधे हुए हैं । ये रस्सियाँ आपको तैयार करनी चाहिए, ताकि आप नए आदमियों को बांध करके अपने पास रख सकें और जो आदमी वर्तमान में हैं आपके पास उनको मजबूती से जकड़े रह सकें । नहीं तो आप इनको भी मजबूती से जकड़े नहीं रह सकोगे, यह भी नहीं रहेंगे । इनकी सफाई भी आपको करनी है । आत्मीयता अगर न होगी और आपका व्यक्तित्व न होगा तो आप के लिए इनकी सफाई करना भी मुश्किल हो जाएगा ।

इसलिए क्या करना चाहिए ? आपके पास एक ऐसी प्रेम की रस्सी होनी चाहिए, आपके पास ऐसी मिठास की रस्सी होनी चाहिए । आपके पास अपने व्यक्तिगत जीवन का उदाहरण पेश करने की ऐसी रस्सी होनी



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चाहिए, जिससे प्रभावित करके आप आदमी के हाथ–पैर जकड़ सकें । सारे के सारे को जकड़ करके जिंदगी भर अपने साथ बनाए रख सकें । यह काम आपको भी विशेषता के रूप में पैदा करना पड़ेगा । **संस्थाएँ इसी आधार पर टिकी हैं । संस्थाएँ जो नष्ट हुई हैं, संगठन जो नष्ट हुए हैं, इसी कारण नष्ट हुए हैं ।**

**गुरु पूर्णिमा पर्व १९८६ में दिए प्रवचन में कहा था –**

धन के नाम पर एक कानी कौड़ी का लाखवाँ हिस्सा भी हमारे पास नहीं है । आपको तलाशी लेना हो या मरने के बाद पता लगाना हो कि गुरुजी के पास क्या मिला तो मालूम होगा कि शांतिकुंज में एक ऋषि रहा करता था और यहाँ की रोटी खाया करता था और सारे दिन चौबीस घंटा काम करता था । बेटे धन के नाम पर हमारे पास



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कुछ भी नहीं है । लेकिन हाँ एक पूँजी है हमारे पास यदि वह न होती तो हम इतनी बड़ी बात क्यों कहते ? हमारे पास वह पूँजी है–तप ।

**अखंड ज्योति, जुलाई ९५ में लिखा है –**

युग शिल्पियों के द्वारा आरंभिक उत्साह में जो कार्य अपनाया जा रहा है उसमें लोकमंगल का परमार्थ प्रयोजन दृष्टव्य होने के कारण श्रेय सम्मान एवं यश तो स्वभावतः मिलना ही है । यह पचे नहीं और उद्धत हो चले तो पागल हाथी की तरह अपना, साथियों का तथा उस संगठन का विनाश करेगा जिसके नीचे बैठकर अपनी स्थिति बनाई है । लोकेषणा जब पागल होती है, तो सर्वप्रथम वह साथियों को मूर्ख छोटा और अनुपयुक्त सिद्ध करने का प्रयत्न करती है ताकि तुलनात्मक दृष्टि से वह अपनी विशिष्टता सिद्ध कर सके । समान साथियों में



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिलजुलकर रहने में महत्वाकांक्षी का अपना वर्चस्व कहाँ उभरता है ।

**अखंड ज्योति, नवंबर ९५ में सृजन शिल्पियों के लिए आचार संहिता में लिखा है –**

सार्वजनिक पैसे को अत्यंत पवित्र धरोहर मानकर उसकी एक एक पाई का इतनी सावधानी से प्रयोग करना कि जाँच करने वाले को इसमें कहीं खोट दिखाई न पड़े । साथ ही अपनी अंतरात्मा और सर्व साधारण को यह विश्वास बना रहे कि दान के पैसे में कहीं किसी प्रकार की कोई गड़बड़ी नहीं हुई है । जिसके भी हाथ में वह धन रहा उसने संतों जैसी निस्पृहता का परिचय दिया है । लोकसेवी द्वारा प्रामाणिकता की दृष्टि से इस प्रसंग में सतर्कता बरतनी चाहिए । श्रेय पाने हर प्रसंग में अपने को अग्रणी सिद्ध करने वाले लोग जन साधारण की दृष्टि में ओछे, बचकाने समझे जाते हैं और लोक सेवी का



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बाना पहनने पर भी बहुत घटिया समझे जाते हैं । उनको सम्मान यदि धोखे से कभी मिल भी जाए तो वह कागज के फूल की तरह थोड़े ही समय में अपना आकर्षण खो बैठता है । नेता बनने के लिए लालायित लोग नाम छपाने, चेहरा मटकाने और माइक पर छाए रहने की कोशिश करते हैं । बड़प्पन जताने के लिए और कुछ हाथ में रहा हो तो उसे भी गँवा बैठते हैं । इनके अनेकों प्रतिस्पर्द्धी विरोधी और ईर्ष्यालु उपज पड़ते हैं । ऐसे विग्रहों का परिणाम उस संगठन या मंच को भी बदनाम करता है जिस पर चलकर वे ऊँचा बनना चाहते हैं । वे स्वयं बदनाम होते हैं और उस संगठन को भी ले डूबते हैं जिसके कि वे नेता कहलाना चाहते थे ।

**अखंड ज्योति, दिसंबर १९९५ में लिखा है–**

लोकसेवियों को याद रखना चाहिए कि सामाजिक कार्यकर्त्ता की वाणी ही नहीं उसका



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पूरा व्यक्तित्व ही बोलता है, और वाणी की अपेक्षा उसका व्यक्तित्व सुना जाता है । वाणी और कर्म जब मिल जाते हैं तो व्यक्तित्व प्रखर बन जाता है । लोकसेवी के विचार और उसके क्रियाकलापों में समानता हो तो उसका व्यक्तित्व भी इतना प्रभावशाली बन सकता है कि वह अपने सेवा क्षेत्र में अभीष्ट परिणाम प्राप्त कर सके ।

**अखंड ज्योति, जनवरी १९८८ में लिखा है –**

**विनोबा जी कहते थे कि किसी संस्था को तब तक जीवित रहना चाहिए जब तक उसके कार्यकर्त्ता निस्पृह और सच्चे सेवाभावी हों । वे न रहें या घट जाएँ तो उन्हें विलासी प्रलोभन के सहारे रोके रहना व्यर्थ है ।** इस कसौटी पर अखण्ड ज्योति के प्रज्ञा परिजन अब तक निरंतर खरे उतरते रहे हैं और उनके सेवा कार्यों से संतुष्ट जनता उन्हें इतना सम्मान और सहयोग प्रदान करती



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है कि उनकी ब्राह्मणोचित निर्वाह आवश्यकताएँ निरंतर पूरी होती रहती हैं । साथ ही इस परमार्थी वर्ग की संख्या भी बढ़ती रहती है । जो गड़बड़ करते हैं, मार्गभ्रष्ट होते हैं वे या तो हट जाते हैं या हटा दिए जाते हैं । **जन समुदाय ऐसे व्यक्तियों को किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं करता ।** लोकेषणा में उलझा व्यक्ति स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारकर ग्लानि भरा भारभूत जीवन जीता देखा जाता है ।

आज जबकि सर्वत्र कर्मठ लोकसेवियों की भारी कमी अनुभव की जाती है तब अपने परिवार में उनका बाहुल्य क्यों है ? ठोस कारण है उसके सूत्र संचालकों की कथनी और करनी की एकता वाला ज्वलंत जीवन, अनुकरणीय अभिनंदनीय स्तर का जीवनयापन, जिसे खुली पुस्तक की तरह हर कोई देखता और पढ़ता रहता है ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**अखंड ज्योति, दिसंबर १९८८ में लिखा है –**

विदूषकों की वाचालता मनोरंजन भर कर सकती है, किसी का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन कर सकने की क्षमता उसमें कहाँ होती है ? महान कार्य हमेशा महान व्यक्तित्वों से ही बन पड़ते हैं । क्षुद्र जन तो नकल बनाते और उपहास करते रहते हैं । श्रद्धा के क्षेत्र में प्रवेश करने पर तो कलई खुलने पर और भी अधिक दुर्गति होती है । युग सृजन के लिए ऐसी प्रतिभाओं को अग्रगामी बनना चाहिए जो प्रामाणिकता और प्रखरता की कसौटी पर अपनी समर्थता सिद्ध कर सकें ।

संचालन में संलग्न सभी प्रतिभाओं को कड़ी हिदायत है कि आर्थिक या नैतिक छिद्र अपनी प्रक्रिया में कहीं बनने न पाए अन्यथा **प्रामाणिकता पर उँगली उठने लगने पर वह तेजस्विता समाप्त हो जाएगी जिसके आधार पर असंभव समझे जाने**



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले कार्य संपन्न होने जा रहे हैं । प्रगति का क्रम तभी तक तूफानी गति से चल सकेगा जब तक उसकी पवित्रता और प्रामाणिकता हर कसौटी पर खरी सिद्ध होती रहेगी ।

अखंड ज्योति, दिसंबर १९६९ में लिखा है –

जिन हाथों में नव निर्माण की मशाल थमा दी गई है तथा इस प्रयोजन की पूर्ति के लिए लोकनायकों की जो विशाल सेना उमड़ती चली आ रही है, उसे आवश्यक बल, साहस तथा साधन उपलब्ध कराने का काम शेष है । अभीष्ट शक्ति के बिना वे भी क्या कर सकेंगे ? सो इसका साधन जुटाना अधिक महत्वपूर्ण समझकर हमें उसके लिए लगना पड़ेगा । आज का लोक नेतृत्व बहुत दुर्बल है । राजनीति, समाज तथा धर्म के सभी क्षेत्रों में ऐसा नेतृत्व दीख नहीं पड़ता जो जनमानस को हिलाकर रखने और अपनी प्रखरता के बल



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर लोगों की अपनी गतिविधियाँ बदलने के लिए प्रभावित तथा विवश कर सके । वाचालता, लोकेषणा और छल-छद्म का आधार लेकर चलने वाले स्वार्थी और संकीर्ण स्तर के लोग अवांछनीयता को बदल सकने में समर्थ नहीं हो सकते । वे अपने लिए धन, यश तथा पद कमा सकते हैं पर आंतरिक प्रखरता के बिना युग परिवर्तन की आवश्यकता पूरी नहीं की जा सकती । परिस्थितियों की माँग है कि हर क्षेत्र में प्रखर नेतृत्व का उदय हो । यह आत्मबल की प्रचुरता से ही संभव हो सकता है । इस अभाव की पूर्ति करना भी हमारी अगली तपश्चर्या का एक प्रयोजन है । युग निर्माण आंदोलन संस्था नहीं एक दिशा है सो अनेक काम लेकर इस प्रयोजन के लिए अनेक संगठनों तथा प्रक्रियाओं का उदय होगा । भावी परिवर्तन का श्रेय युग निर्माण आंदोलन को मिले यह आवश्यक नहीं ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनेक नाम रूप हो सकते हैं और होंगे । उससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं । मूल प्रयोजन विवेकशीलता की प्रतिष्ठापना और सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन से है सो हर देश, हर समाज, हर धर्म और हर क्षेत्र में इन तत्वों का समावेश करने के लिए अभिनव नेतृत्व का उदय होना आवश्यक है ।

**अखंड ज्योति, जनवरी १९६९ में लिखा है –**

धन अपने पास कभी रहा नहीं । उसे रहने नहीं दिया गया । आता तो कई ओर से रहा, पर ब्रह्मवर्चस् की उपलब्धि में उसे प्रधान बाधा समझ कर सदा विदा ही किया जाता रहा । पैतृक जमींदारी बहुत बड़ी थी । समाप्त हुई तो इसके अनुदान से एक बड़ी रकम के सरकारी बॉण्ड मिले । उन्हें इस हाथ ले उस हाथ गायत्री तपोभूमि में दे दिया गया । पत्नी ने भी सभी बहुमूल्य आभूषण हमारी ही तरह दे दिए । कुछ जमीन बच गई जो उसे देकर जन्मभूमि में



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाईस्कूल बनवा दिया । अखण्ड ज्योति प्रेस की सारी मशीनें गायत्री तपोभूमि को दे चुके । अब केवल साहित्य रहा सो अपने जाने से पूर्व उसे भी गायत्री तपोभूमि को दे देंगे । अब संपदा कुछ बचती नहीं है जिसे किसी के नाम वसीयत किया जाए । मन गुरुदेव को और आत्मा परमेश्वर को पहले ही दे चुके । शेष शरीर रहेगा सो उसका ऐसा उपयोग होना चाहिए जो उसी जन समाज के कुछ काम आए जिसे हमने सदा असीम प्यार किया है ।

**अखंड ज्योति, मई १९७१ में लिखा है –**

देश व्यापी कार्य को देखते हुए कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ने वाली है । आशा है आगे यह संख्या बहुत बढ़ जाएगी । इस टीम में अहंकार या लोलुपता पैदा न होने पाए इसके लिए कड़े नियम बना दिए गए हैं । इनमें से कोई गुरु बनने, पैर पुजाने व्यक्तिगत रूप से दान दक्षिणा लेने का प्रयास न करे ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऐसी सख्त मनाही कर दी है । अपने पीछे के सभी लोग लोकसेवी कार्यकर्ता मात्र रहेंगे । वही उनका स्तर होगा ।

**अखंड ज्योति, जून १९७१ में लिखा है –**

नव निर्माण की लाल मशाल में हमने अपने सर्वस्व का तेल टपका कर उसे प्रकाशवान रखा है । अब परिजनों की जिम्मेदारी है कि वे उसे जलती रखने के लिए हमारी ही तरह अपने अस्तित्व के सार तत्व को टपकाएँ । परिजनों पर यही कर्तव्य और उत्तरदायित्व छोड़कर इस आशा के साथ हम विदा हो रहे हैं कि महानता की दिशा में कदम बढ़ाने की प्रवृत्ति अपने परिजनों में घटेगी नहीं बढ़ेगी ।

**अखंड ज्योति, मई १९७१ में लिखा है –**

अगले दिनों ऐसे कर्मठ लोकसेवी उत्पन्न होंगे जो त्याग और बलिदान के अस्त्र–शस्त्र लेकर नव निर्माण के महान अभियान का



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नेतृत्व कर सकने की ऐतिहासिक एवं अनुकरणीय भूमिका प्रस्तुत कर सकें । अगले दिनों हमारे क्रियाकलाप प्रत्यक्ष न दीखेंगे और उनका श्रेय हमें न मिलेगा ? पर इससे क्या ? तथ्य तो तथ्य ही रहेगा । इन दिनों सच्चे और कर्मठ लोक निर्माताओं का भारी अभाव है जिनमें विश्व मानव के भविष्य निर्माण का साहस एवं उत्सर्ग उमड़ा पड़ रहा हो, ऐसे कर्मवीर कहीं दिखाई नहीं पड़ते । सार्वजनिक क्षेत्र में धन, पद और यश के लोभी सिंह की खाल ओढ़े शृगाल भर विचरण कर रहे हैं । सच्ची लगन के थोड़े से भी कर्मवीर क्षेत्र में रहे होते तो विश्व का कायाकल्प हो सकना कठिन न रह जाता । इसी अभाव की पूर्ति करने के लिए हम अपने भीतर प्रचंड दावानल उत्पन्न करेंगे । जिसकी ऊष्मा से जंगल के जंगल वृक्ष के वृक्ष जलते दिखाई पड़ें और लोक निर्माण के लिए जिन साहसी सैनिकों का



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आज अभाव दीख पड़ रहा है । उसकी कमी पूरी की जा सके । अगले दिनों बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक क्रांति की त्रिवेणी किस तरह उद्भूत होती है उसे लोग आश्चर्य भरी आँखों से देखेंगे । लोग सेवियों की एक ऐसी उत्कृष्ट चतुरंगिणी खड़ी कर देना जो असंभव को संभव बना दे, नरक को स्वर्ग में परिणत कर दे, हमारे ज्वलंत जीवन क्रम का अंतिम चमत्कार होगा । अब तक के जिन छुटपुट कामों को देखकर लोग हमें सिद्ध पुरुष कहने लगे हैं उन्हें अगले दिनों के परोक्ष कर्तृत्व का लेखाजोखा यदि सूझ पड़े तो वे इससे भी आगे बढ़कर न जाने क्या-क्या कह सकते हैं ।

अखंड ज्योति, जून १९७१ में लिखा है –

अब किसी को भी धन का लालच नहीं करना चाहिए और बेटे पोतों को दौलत छोड़ मरने की विडंबना में नहीं उलझना चाहिए । ये



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दोनों ही प्रयत्न निरर्थक सिद्ध होंगे । अगला जमाना जिस तेजी से बदल रहा है, उससे इन दोनों विडंबनाओं से कोई कुछ लाभान्वित न हो सकेगा बल्कि लोभ और मोह की इस दुष्प्रवृत्ति के कारण सर्वत्र धिक्कारा भर जाएगा । दौलत छिन जाने का दुख और पश्चात्ताप सताएगा सो अलग । इसलिए यह परामर्श हर दृष्टि से सही ही सिद्ध होगा कि मानव जीवन जैसी महान उपलब्धि का उतना ही अंश खर्च करना चाहिए जितना निर्वाह के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक हो । इस मान्यता को हृदयंगम किए बिना आज की युग पुकार के लिए किसी के लिए कुछ ठोस कार्य कर सकना संभव न होगा । एक ओर से दिशा मोड़े बिना दूसरी दिशा में चल सकना संभव ही न होगा । लोभ, मोह में जो जितना डूबा हुआ होगा उसे लोक मंगल के लिए न समय मिलेगा न सुविधा । **बेटे पोतों के लिए**



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**अपनी कमाई की दौलत छोड़ मरना भारत की असंख्य कुरीतियों और दुष्ट परंपराओं में से एक है ।** संसार में अन्यत्र ऐसा नहीं होता । लोग अपनी बची हुई कमाई को जहाँ उचित समझते हैं, वसीयत कर जाते हैं । इसमें न लड़कों की शिकायत होती है, न बाप को कंजूस कृपण की गालियाँ पड़ती हैं । सो हम लोगों में से जो विचारशील हैं उन्हें तो ऐसा साहस इकट्ठा करना चाहिए । जिनके पास गुजारे भर के लिए पैतृक संपत्ति मौजूद है उनके लिए यही उचित है कि आगे के लिए उपार्जन बिल्कुल बंद कर दे और सारा समय परमार्थ के लिए लगाएँ ।

**अखंड ज्योति, जून १९७१ में लिखा है–**

भीड़ का संगठन बेकार है । मुर्दों का पहाड़ इकट्ठा करने से तो बदबू ही फैलेगी । जिनके मन में कसक है, जो वस्तुस्थिति को समझ चुके हैं उन्हीं का एक महान प्रयोजन के



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए एकत्रीकरण वास्तविक संगठन कहला सकता है । युग निर्माण परिवार संगठन में अब वे ही लोग लिए जा रहे हैं जो ज्ञान यज्ञ के लिए अंशदान, समय दान देने के लिए निष्ठा और तत्परता दिखाने लगे हैं । कर्मठ लोगों का संगठन बन जाने पर प्रचारात्मक अभियान को संतोषजनक स्तर तक पहुँचा देने पर ऐसी स्थिति आ जाएगी कि अति महत्वपूर्ण कार्य जो इन दिनों शक्ति और स्थिति के अभाव में नहीं कर पा रहे हैं, वे आसानी से किए जा सकें ।

अखंड ज्योति, जून १९७१ में लिखा है कि–

दुष्टता की दुष्प्रवृत्तियाँ कई बार इतनी भयावह होती हैं कि उनका उन्मूलन करने के लिए संघर्ष के बिना काम ही नहीं चल सकता । रूढ़िवादी, प्रतिक्रियावादी, दुराग्रही, मूढ़मती, अहंकारी एवं उद्दंड निहित स्वार्थ और असामाजिक तत्व



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विचारशीलता न्याय की बात सुनने को तैयार ही नहीं होते । वे सुधार और सदुद्देश्य को अपनाना तो ब्रूर और उल्टे प्रगति के पथ पर पग–पग पर रोड़े अटकाते हैं । ऐसी पशुता, पैशाचिकता से निबटने के लिए प्रतिरोध और संघर्ष अनिवार्य रूप से आवश्यक है । हिन्दू समाज में अन्ध परंपराओं का बोलबाला है । जाति–पाँति के आधार पर ऊँच–नीच, स्त्रियों पर अमानवीय अत्याचार, बेईमानी और गरीबी के लिए विवश करने वाला विवाहोन्माद और मृत्यु भोज धर्म के नाम पर लोक श्रद्धा का शोषण आदि ऐसे कारण हैं जिन्ने देश की आर्थिक बरबादी और तद्जनित असंख्य विकृतियों को जन्म दिया है । बेईमानी, मिलावट, रिश्वत और भ्रष्टाचार का हर जगह बोलबाला है । सामूहिक प्रतिरोध के अभाव में गुंडा तत्व दिन दिन प्रबल होता जा रहा है और अपराधों की प्रवृत्ति दिन दूनी



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रात चौगुनी पनप रही है । यह सब केवल प्रस्तावों एवं भाषणों से मिटने वाला नहीं है । जिनकी दाढ़ में खून लग गया है या जिनका अहंकार आसमान छूने लगा है वे सहज ही अपनी गतिविधियाँ बदलने वाले नहीं हैं । उन्हें संघर्षात्मक प्रक्रिया द्वारा इस बात के लिए विवश किया जाएगा कि वे टेड़ापन छोड़ें और सीधे रास्ते पर चलें । इसके लिए हमारे दिमाग में गाँधी जी के सत्याग्रह, मजदूरों के घेराव और चीनी कम्युनिस्टों की सांस्कृतिक क्रांति के कड़ुवे मीठे अनुभवों को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी समग्र योजना है जिससे अराजकता भी न फैले और अवांछनीय तत्वों को बदलने के लिए विवश किया जा सके । उसके लिए जहाँ स्थानीय व्यक्तिगत और सामूहिक संघर्षों के क्रम चलेंगे वहाँ स्वयंसेवकों की एक विशाल युग सेना का गठन भी करना पड़ेगा । जो बड़े से बड़ा त्याग



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बलिदान करके अनौचित्य से करारी टक्कर ले सके । भावी महाभारत इसी प्रकार का होगा । वह सेनाओं से नहीं महामानवों, लोकसेवियों के द्वारा लड़ा जाएगा । सतयुग आने से पूर्व ऐसा महाभारत अनिवार्य है । अवतारों की शृंखला सृजन के साथ-साथ संघर्ष की योजना भी सदा साथ लाई है । युग निर्माण की लाल मशाल का निष्कलंक अवतार अगले दिनों इसी भूमिका का संपादन करे तो इसमें किसी को आश्चर्य नहीं मानना चाहिए । प्रचारात्मक, संगठनात्मक, रचनात्मक और संघर्षात्मक चतुर्विध कार्यक्रमों को लेकर युग निर्माण योजना क्रमशः अपना क्षेत्र बनाती और बढ़ाती चली जाएगी । निःसंदेह इसके पीछे ईश्वरीय इच्छा और महाकाल की विधि व्यवस्था काम कर रही है । हम केवल उसके उद्घोषक मात्र हैं । यह आंदोलन न तो शिथिल होने



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाला है और न निरस्त । हमारे तपश्चर्या के लिए चले जाने के बाद वह घटेगा नहीं । हजार लाख गुना विकसित होगा । सो हम में से किसी को शंका कुशंकाओं के चक्र में भटकने की अपेक्षा अपना यह दृढ़ निश्चय परिपक्व करना चाहिए कि विश्व का निर्माण होना ही है और उसमें अपने अभियान को अपने परिवार को अति महत्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका संपादन करना ही है ।

**अखंड ज्योति, नवंबर १९६९ में लिखा है –**

हमारा जीवन रूढ़ियों और विडंबनाओं की धुरी पर नहीं घूमा है । उससे अति महत्वपूर्ण प्रयोगों परीक्षणों और अनुभवों का एक अच्छा खासा भंडार जमा हो गया है । हम चाहते थे कि यह उपलब्धियाँ अपने अनुयायियों को देते जाएँ ताकि वे भी हमारी ही तरह जीवन की सार्थकता का संतोष अनुभव कर सकें । लेख लिखने



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और प्रवचन करने का हमारा धंधा नहीं है । हमारी प्रतिभा, विद्या और क्षमता बहुमूल्य है उसको बाजार में भुनाया जाए तो बहुत कुछ वसूल किया जा सकता है । लेखन, प्रवचन हमारा व्यवसाय नहीं वरन् हमारी अंतःकरण की इठन है, जो निरंतर इसलिए होती रहती है कि हमारी अनुभूतियों और उपलब्धियों का लाभ हमारे सहचरों को भी मिलना चाहिए । उपरोक्त दोनों ही क्रियाकलाप हम अपनी आंतरिक संपदा दूसरों को हस्तांतरित करने के उच्च उद्देश्य से चलाते रहे हैं । **कह नहीं सकते किसने उन्हें कितना महत्व दिया और कितनों ने उन्हें पढ़–सुनकर पल्ला झाड़ दिया ।**

जो हो हम एकरस, एक निष्ठ भाव से अपने मार्ग पर चलते हुए लंबी मंजिल पूरी कर चुके । विराम का अवसर आया तो यह उत्कंठा तीव्र हो चली कि हमारा परिवार



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

घटिया स्तर का जीवनयापन करने का कलंक न ओढ़े रहे । प्रकारांतर से यह लांछन अपने ऊपर भी आता है । हम किस बूते पर अपना सिर गर्व से ऊँचा कर सकेंगे और किस मुख से यह कह सकेंगे कि अपने पीछे कुछ ऐसा छोड़कर आए जिसे देखकर लोग उसके संचालक का अनुमान लगा सकें । ईश्वर की महान कृतियों को देखकर ही उसकी गरिमा का अनुमान लगाया जाता है । हमारा कर्तृत्व पोला था या ठोस यह अनुमान उन लोगों को परख करके लगाया जाएगा, जो हमारे श्रद्धालु एवं अनुयायी कहे जाते हैं । यदि वे वाचालता भर के प्रशंसक और दंडवत प्रणाम भर के श्रद्धालु रहे तो माना जाएगा कि सब कुछ पोला रहा । असलियत कर्म में सन्निहित है । वास्तविकता की परख क्रिया से होती है । यदि अपने परिवार की क्रिया पद्धति का स्तर दूसरे अन्य नर पशुओं जैसा बना



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहा तो हमें स्वयं अपने श्रम और विश्वास की निरर्थकता पर कष्ट होगा और लोगों की दृष्टि में उपहासास्पद बनना पड़ेगा । यह अवसर न आए इसलिए हम इन दिनों बहुत जोर देकर अपने उद्‌बोधन का स्वर तीखा करते चले जा रहे हैं और गतिविधियों में गर्मी ला रहे हैं ताकि यदि कुछ सजीव लोग अपने साथियों में रहे हों तो आगे आएँ और मृत मूर्च्छित अपनी मांद में जाकर चुपचाप पड़ जाएँ । **बात बहुत, काम कुछ नहीं वाली विडंबना का तो अब अंत होना ही चाहिए ।**

**अखंड ज्योति, जनवरी १९९६ में लिखा है –**

सेवा धर्म के मार्ग में एक बड़ा अवरोध अहंता का है । यह परोक्ष होती है । अपनी पकड़ में आती है और न दूसरों की परख में । इसलिए उसकी उखाड़ पछाड़ भी नहीं होती । फलतः मजे में अपने कोंतर में बैठी पोषण पाती, जोंक की तरह मोटी



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होती रहती है । इनकी विनाश लीला इतनी बड़ी है जिसकी तुलना में लोभ, मोह से होने वाली हानि को नगण्य जितना ठहराया जा सकता है ।

**अहंता, बड़प्पन पाने की आकांक्षा को कहते हैं । दूसरों की तुलना में अपने को अधिक महत्व, गौरव, श्रेय, पद, सम्मान मिलना चाहिए । यही है अहंता की आकांक्षा । इस जादूगरनी द्वारा लोगों को चित्र विचित्र विडंबनाएँ रचते देखा जा सकता है ।**

विशिष्ट लोग जो कि आदर्शवादी, त्यागी, अध्यात्मवादी, योगी, लोकसेवी के रूप में प्रख्यात हैं । विश्लेषण करने पर इनके भीतर भी अहंता चोर दरवाजे से घुसी और तानाशाह की तरह सिंहासनारूढ़ बनी बैठी दिखाई पड़ती है । संतों के अखाड़े, धर्म, संप्रदाय, संस्था संगठन बड़ों की इस प्रतिस्पर्द्धा में कलह के केन्द्र बने रहते हैं ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनके संचालकों में से कौन बड़ा कहलाए ? एक ही संस्था के सदस्य एक ही लक्ष्य की दुहाई देने वाले आखिर इस कदर लड़ते क्यों हैं ? एक दूसरे को नीचा दिखाने में निरत क्यों हैं ? इसका वास्तविक कारण सामान्य लोगों की समझ से बाहर होता है । उन्हें तो कुछ भी कहकर बहका दिया जाता है । वास्तविकता इतनी भर होती है कि वे येन केन प्रकारेण अपना बड़प्पन सिद्ध करना चाहते हैं । दूसरा जब आड़े आता है तो मुहल्ले के कुत्तों की तरह अकारण एक दूसरे पर टूट पड़ते हैं । संगठनों के सर्वनाश में एक मात्र नहीं तो सर्वप्रधान कारण इस अहंता सूर्पनखा को ही माना जाएगा । मनोमालिन्य और विग्रह के बहाने तो सिद्धांतवाद की दुहाई देते हुए कुछ भी गढ़े जा सकते हैं, पर यदि भारी बाँध में दरार पड़ने का कारण खोजने के लिए



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गहराई तक उतरा जाए तो प्रतीत होगा कि अहंता की नन्हीं सी चुहिया ही दुम उठाए, मुँह मटकाती, पंजे दिखाती अपनी करतूत का करिश्मा दिखा रही है ।

लोकसेवी, अध्यात्मवादी का कलेवर बना लेने पर भी यदि अहंता न छूटी तो पैर पुजाने के लिए अनेकानेक पाखण्ड रचते, लोगों को ठगते, उलझाते हुए उसे देखा जाएगा । आए दिन कुछ करतूतें, चमत्कारों की डींग हाँकते तथा और भी न जाने उसे क्या–क्या करते देखा जाएगा ।

सार्वजनिक जीवन में ऐसे लोगों का घुस पड़ना वस्तुतः संगठन के लिए एक प्रकार से अभिशाप ही सिद्ध होता है । वे जितना जनहित करते हैं उसकी तुलना में हजार गुना अनर्थ करके रख देते हैं । इसलिए उत्कृष्टता के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले के लिए मनीषियों ने वित्तेषणा ( लोभ ) पुत्रेषणा ( मोह ) और



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोकेषणा ( अहंकार, बड़प्पन ) की विविध एषणाओं का परित्याग करने के उपरांत ही श्रेय मार्ग पर पैर बढ़ाने की सलाह दी है । लोकसेवी में नम्रता, निरहंकारिता उत्पन्न करने के लिए प्राचीनकाल में दरवाजे–दरवाजे भिक्षा माँगने के लिए जाना पड़ता था । यों घर बैठे भी भोजन मिलने का प्रबंध ऐसे लोगों के लिए कठिन नहीं है, पर अहंकार गलाने का तो कोई न कोई स्वरूप चाहिए ही । इसके बिना साधु कैसा ? ब्राह्मण कैसा ? लोकसेवी कैसा ? प्रज्ञा मिशन की परंपरा भी यही है । प्रत्येक आश्रमवासी को श्रमदान अनिवार्यतः करना पड़ता है और उसमें नाली साफ करने, झाड़ू लगाने, कूड़ा ढोने जैसे कार्य ही करने होते हैं ।

कई व्यक्ति सोचते हैं–हम संस्था से निर्वाह लेकर काम क्यों करें ? 'अपना खाने' के नाम पर निर्वाह लेने वालों से श्रेष्ठ क्यों न



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनें । कुछ लोग इस कारण काम ही नहीं करते । इस असमंजस के पीछे कोई सिद्धांत काम नहीं करता है । मात्र अहंकार ही उछलता है ।

ऐसे व्यक्तियों से बचना, जो कालनेमि की तरह सतत् अपना षडयंत्र रचते व लोकसेवी की प्रगति के मार्ग में रोड़ा बनते हैं। इस प्रकार अनेकों तरह के व्यक्ति हैं । कोई सत्परामर्श देकर मनोबल ऊँचा उठाते व साधना क्षेत्र में सहयोगी बनते हैं, किंतु आज बाहुल्य ऐसे व्यक्तियों का है जो मायावी कालनेमि की भूमिका निभाते अच्छे भले आदमी को पथभ्रष्ट कर देते हैं । हर समाज सेवी संस्था को ऐसे कालनेमियों से बचना पड़ता है । रावण के भाई कालनेमि की कुटिलता अभी भी अपना कुचक्र रचने में लगी हुई है । तपस्वी, योगी, महात्मा कोई भी वेश धारण कर उसकी विक्षुब्ध जीवात्मा सतत्



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भटकती एवं कमजोर मनःस्थिति वाले व्यक्तियों को खोजती रहती है । युग शिल्पियों प्रज्ञा परिजनों को लोभ, मोह, अहंता इन तीन के अतिरिक्त कालनेमि परंपरा के व्यक्तियों से भी सावधान रहना चाहिए।

**अखंड ज्योति, फरवरी ९६ में लिखा है–**

लोक सेवी अपनी शक्तियों का नियोजन जनसेवा के लिए परमार्थ कार्यों के लिए करता है । अतः उसे अपनी आवश्यकताओं और सुविधाओं के लिए दूसरे से भिन्न दृष्टिकोण अपनाना चाहिए और अपना जीवन स्तर आवश्यकताओं तथा साधनों के उपयोग की रीति–नीति भिन्न रखनी चाहिए ।

अपने निर्वाह के लिए लोक सेवी को कम से कम आवश्यकताएँ रखने का दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए । समझा जाता है कि हम जितनी शानशौकत और मौज मजे के विलासिता पूर्ण साधनों का उपयोग करेंगे



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उतना ही बड़प्पन मिलेगा । वस्तुतः यह सोचना गलत है इसलिए अपने बड़प्पन की परिभाषा बदलनी चाहिए । बड़प्पन धन–संपत्ति या शान–शौकत से नहीं उत्कृष्ट और आदर्श व्यक्तित्व तथा महान बनाने वाले सद्‌गुणों से मिलता है । प्राचीनकाल में लोकसेवी परंपरा के अंतर्गत जितने भी संत, ऋषि, विचारक, मनीषी और महापुरुष हुए उन्होंने यही दृष्टिकोण अपनाया ।

लोकसेवियों को अपने स्वरूप की गौरव गरिमा का ध्यान रखने के लिए उज्ज्वल चरित्र और धवल व्यक्तित्व की आवश्यकता अनुभव करनी चाहिए । इस संबंध में यह मान्यता बनाई और अपनाई जाए कि हम जो कुछ भी कहना चाहें, जो कुछ भी शिक्षा दें वह वाणी से कम और व्यक्तित्व से अधिक उद्‌भूत हो ।

लोकसेवी जन श्रद्धा का भी दोहन करने



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगा अन्यथा एक समय था जब कि साधु वेश का अर्थ ही निस्पृह, अपरिग्रही और सेवाभावी व्यक्ति समझा जाता था । लोकसेवी को भी अपना स्वभाव, अपना रहन–सहन और अपना आचरण इस स्तर का रखना चाहिए कि उसे देखकर ही लोगों में लोकसेवी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो ।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

**अखंड ज्योति, जनवरी १९९७ में लिखा है –**

दोषों को खोजना, दुर्गुणों को देखना, उनका विरोध करना अच्छा काम है लेकिन तब जब यह काम अपने से शुरू किया जाए । हम खुद की बुराइयों को ज्यादा अच्छी तरह से समझ सकते हैं । दूसरों के बारे में पता लगाना काफी मुश्किल काम है । उनके बारे में तो उतना ही पता चल सकता है जितना बाहर से दिखाई, सुनाई पड़ता है । जो दिखाई–सुनाई पड़ता है, वह होता नहीं और जो असलियत होती है, उसे देख सुन समझ



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाना मुश्किल है । यह वर्तमान तथा हमारे अपने जीवन में भी लागू होता है । इसलिए दोषों की निंदा और उनके उन्मूलन की कोशिश हमें खुद अपने आप से शुरू करनी चाहिए । दूसरों की बुराइयाँ हम जान भी जाएँ तो भी क्या फायदा ? उन पर हमारा कोई दवाब तो है नहीं, वे हमारी बात मान ही लें, यह कोई आवश्यक नहीं । सबसे ज्यादा हमारा दवाब प्रभाव अपने ऊपर ही है ।

**ऐसी शुरूआत बड़ी हिम्मत का काम है । दूसरा कोई हमारी कमियाँ गिनाए भी और वे सच्ची भी हो तो अपना अहंकार उसे मानने नहीं देगा,** लेकिन जब हम अपना विश्लेषण स्वयं करते हैं, दोष दुर्बलताओं का स्पष्ट चित्र अपने मानस पटल पर स्वयं खींचते हैं तो बेचारे अहं की सिट्टी–पिट्टी गुम हो जाती है । उसे सच्चाई स्वीकार करते ही बनता है । **अपनी कुरूपता स्वीकार करने में जिसे डर**



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**नहीं और जिसमें उसके निवारण की हिम्मत है, वह किसी बड़े से बड़े शूरवीर से कम नहीं ।**

दूसरों को तुच्छ समझने और उनका छिद्रान्वेषण करने से भला क्या हासिल होगा ? बल्कि ऐसा करके हम अपना मनुष्यत्व भी खो बैठेंगे । जो इस काम में हमारे सहयोगी बन सके वही हमारे सच्चे मित्र हैं । **आमतौर पर होता यही है कि चापलूसी भाती है और दोषों की चर्चा करने वाला शत्रु लगता है ।**

कोई हमारी निंदा करे और हम किसी की निंदा करें इसमें समस्या का समाधान नहीं हो जाएगा । बुराइयों का अंत करने के लिए सिर्फ चीख पुकार या नारेबाजी पर्याप्त नहीं । उसके लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है । इसमें सबसे पहला और सबसे प्रभावशाली कदम यह हो सकता है कि हम अपने दोषों को साहसपूर्वक स्वीकार करें ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महापुरुषों का जीवन इस बात का साक्षी है कि वे पर दोष दर्शन के स्थान पर सतत आत्म निरीक्षण करते रहे । **अच्छा यही है कि अपनी त्रुटियाँ खोजें और उन्हें दूर करें । यही अपनी शक्तियों को पहचानने और उन्हें विकसित करने का राजमार्ग है ।**

**अखंड ज्योति ,जनवरी १९९७ में लिखा है –**

पूज्य गुरुदेव ने १९८६ में लेख तब लिखा था, जब सूक्ष्मीकरण साधना के बाद वसंत पर्व पर वे सबसे मिलने लगे थे । कुछ कारणों वश इसका प्रकाशन तब रोक दिया गया था । यह सुरक्षित रखा जाए । जब ऐसी मनोवृत्ति बढ़ती दिखाई दे तब इसे प्रकाशित करें ।

आज जब गायत्री परिवार प्रसिद्धि के शिखर पर है, ऐसी मनोवृत्ति वाले व्यक्ति भी बढ़ते दिखाई देते हैं, जो भिन्न–भिन्न मायावी रूपों में स्वार्थों की सिद्धि ही अपना लक्ष्य



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानकर कुछ भी कर गुजरने से बाज नहीं आ रहे हैं । ऐसे में यही सबसे सही समय मान कर प्रकाशित किया जा रहा है ।

''जिस मनुष्य को अनास्था का, नकारात्मक चिंतन का घुन लग जाए उसकी क्षमता का अपहरण हो जाता है एवं वह पारस्परिक विद्वेष फैलाए एवं चलती गतिविधियों में विघ्न खड़ा किए बिना चैन नहीं लेता । ऐसा मनुष्य जिस संगठन या समाज में घातक, तोड़ने वाली गतिविधियों में ही निरत रह कर वही काम करता है जो स्रष्टा को, नियंता को पसन्द नहीं एवं इस प्रकार वह अपने विनाश के लिए अपने लिए स्वयं ही खाई खोदने का कार्य करता है। यह इन दिनों जगह–जगह इसलिए भी चलता देखा जा रहा है कि दबाव की रचनात्मक शक्तियाँ दिनोंदिन प्रबल होती चली जा रही हैं और आसुरी शक्तियों का अपने



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आमूलचूल उन्मूलन का खतरा स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है ।

आसुरी ताकतें प्रत्यक्ष तो नीति के विरोध में खड़ी नहीं हो सकतीं क्योंकि उनका कोई आधार नहीं होता । वे पूर्णतः खोखली होती हैं । **सत्य में हजार हाथी के समान बल होता है । उनसे सामने आकर लड़ा नहीं जा सकता।** इसलिए वे छद्म रूप बनाती हैं। अपने को सही और दूसरे को गलत बताकर कोई विवाद विग्रह खड़ा करती हैं जिससे चलती गाड़ी रुक जाए । इनका सारा व्यापार अफवाहों, कानाफूंसियों और जिस–तिस को बरगला कर सृजन शिल्पियों के समुदाय में विग्रह खड़ा करना होता है । इनसे सावधान रहना अत्यावश्यक है अन्यथा अपने ही लोगों में से कुछ ऐसे बागी खड़े हो जाते हैं जो चिरकाल से किए गए प्रगति प्रयासों को चौपट करके रख देते हैं ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऐसे कृमि–कीटकों को कालनेमि के वंशज कहा जा सकता है ।

कालनेमि एक व्यक्ति नहीं, वृत्ति का नाम है । इन दिनों हर संगठन में, समाज में, हर वर्ग में ऐसी वृत्ति का बाहुल्य देखा जा सकता है । हमने बड़ा परिश्रम कर स्नेह की डोर में बाँधकर इतना बड़ा गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, युग निर्माण योजना का ढाँचा खड़ा किया है । कालनेमि का मायाचार इसमें भी जोर–शोर से चल सकता है । उसका काम तो फसल चौपट करना है । उसे नव सृजन युग निर्माण से क्या मतलब ? उसके वाक्जाल और प्रलोभनों में किसी को आए बिना हमारे बताए आदर्शवादी मार्ग पर ही चलने का प्रयास करना चाहिए । यही सबके लिए वरेण्य है । **''मिशन तो महाशक्तियों के संरक्षण में चल रहा है । उसका तो कुछ बिगड़ने वाला नहीं है, पर खतरे से सावधान**



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

न रहा गया तो शाखा संगठन विभाजित और दुर्बल होते चले जाएँगे । इस आशंका को प्राणवानों को किसी भी हालत में सफल नहीं होने देना चाहिए।

**अखंड ज्योति, मार्च १९९७ में लिखा है कि–**

सलाह किसकी स्वीकार करें ? अपना सच्चा हितैषी कौन है ? इसका निर्णय करते हुए यही तथ्य ध्यान में रखा जाना चाहिए कि औचित्य, न्याय एवं विवेक की कसौटी पर कौन से परामर्श खरे उतरते हैं । लोकमत या लोकापवाद की चिंता भी औचित्य के आधार पर ही करनी चाहिए । यदि सही बात मानने के कारण सही राह चलने के कारण उपहास सहना पड़ रहा है तो उस अवसर पर हाथी चलता है तो कुत्ते भौंकते हैं, वाली नीति ही अपनानी चाहिए, किंतु किसी दबाव में आकर अनीति नहीं अपनानी चाहिए ।

सलाह यदि अपनत्व के आधार पर ही



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

माननी हो तो इस अपनत्व के दायरे को थोड़ा बढ़ाया जाना चाहिए । खून के रिश्तों से कहीं अधिक सगे वे व्यक्ति होते हैं जो स्वार्थ एवं अहं से रहित हैं । जिनकी वृत्तियों में शोषण का कलुष नहीं है, ऐसे विशिष्ट प्रज्ञावान पुरुष अपने सगे संबंधियों से भी अधिक होते हैं । बुद्ध, विवेकानंद जैसे ज्ञानीजनों ने अनेकों को अनूठी सलाह देकर तुच्छ से लोगों में भाव विकास कर उन्हें आसमान की बुलंदियों तक पहुँचा दिया । अपने समय में उठा विचारक्रांति का तूफान भी कुछ ऐसा ही है । प्रज्ञावतार की सलाह एवं प्रेरणाएँ जिस किसी को भी महामानव बनाने में समर्थ हैं, बशर्ते उन्हें पूर्ण हृदय से स्वीकार किया जाए ।

**अखंड ज्योति, जून १९९७ में लिखा है कि–**

**संसार के सुधारकों में प्रत्येक को प्रायः आक्रमण सहने पड़े हैं ।** संगठित अभियानों को नष्ट करने के लिए कार्यकर्ताओं में फूट



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डालने, बदनाम करने, बल प्रयोग से आतंकित करने जैसे प्रयत्न सर्वत्र हुए हैं । ऐसा क्यों होता है यह विचारणीय है । सुधारक पक्ष को अवरोधों का सामना करने पर उनकी हिम्मत टूट जाने, साधनों के अभाव से प्रगति क्रम शिथिल या समाप्त हो जाने जैसे प्रत्यक्ष खतरे तो हैं किंतु परोक्ष रूप से इसके लाभ भी बहुत हैं । व्यक्ति की श्रद्धा एवं निष्ठा कितनी सच्ची और कितनी ऊँची है इसका पता इसी कसौटी पर कसने से लगता है कि आदर्शों का निर्वाह कितनी कठिनाई सहन करने तक किया जाता रहा । अग्नि तपाए जाने और कसौटी पर कसे जाने से कम में सोने के खरे–खोटे होने का पता चलता ही नहीं । **आदर्शों के लिए बलिदान से ही महा मानवों की अंतःश्रद्धा परखी जाती है और उसी अनुपात से उनकी प्रामाणिकता को लोक मान्यता मिलती है, जिसे कोई कठिनाई नहीं सहनी पड़ी, ऐसे**



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सस्ते नेता सदा संदेह और आशंका का विषय बने रहते हैं । श्रद्धा और सहायता किसी पर तभी बरसती है जब वह अपनी निष्ठा का प्रभाव प्रतिकूलताओं से टकराकर प्रस्तुत करता है ।

अंध श्रद्धाओं का समर्थन भी जोखिम भरा है । किसी के साथ अनगढ़, अधकचरे, अपरिपक्वों की मंडली हो तो वह उसे जनशक्ति समझने की भूल करता रहता है । किसकी श्रद्धा एवं आत्मीयता कितनी गहरी है इसका पता चलाने का एक मापदंड यह भी है कि अफवाहों या आरोपों पर तो विश्वास कर लिया जाए, किंतु सदाशयता की पक्षधर अनेकानेक घटनाओं को क्षण भर में भुला न दिया जाए । जो अफवाहों को फूँक से उड़ा सकते हैं वे वस्तुतः बहुत ही हल्के और उथले होते हैं । ऐसे लोगों का साथ किसी बड़े प्रयोजन के लिए कभी कारगर सिद्ध नहीं हो



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकता । उन्हें कभी भी कोई भी, कुछ भी कहकर विचलित कर सकता है । ऐसे विवेकहीन लोगों की छटनी कर देने के लिए– कुचक्रियों द्वारा लगाए गए आरोप या आक्रमण बहुत ही उपयोगी सिद्ध होते हैं । योद्धाओं की मंडली में शूरवीरों का स्तर ही काम आता है । शंकालु, अविश्वासी, कायर प्रकृति के सैनिकों की संख्या भी पराजय का एक बड़ा कारण होती है । ऐसे मूढ़मतियों को अनाज में से भूसा अलग कर देने की तरह यह आक्रमणकारिता बहुत ही सहायक सिद्ध होती है । दुरभि संधियों के प्रति जन आक्रोश उभरने से सहयोगियों का समर्थन और भी अधिक बढ़ जाता है । उस उभार से सुधारात्मक आंदोलनों का पक्ष सबल ही होता है । कुसमय पर ही अपने पराए की परीक्षा होती है । इस कार्य को आततायी जितनी अच्छी तरह संपन्न करते हैं उतना कोई और नहीं । अस्थिर मति



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और उद्दंड साथियों से पीछा छूट जाना और विवेकवानों का समर्थन सहयोग बढ़ना जिन प्रतिरोधों के कारण संभव होता है, वह आक्रमणों की उत्तेजना उत्पन्न हुए बिना संभव ही नहीं होता ।

किसी महान व्यक्ति या आंदोलन के प्रति प्रतिगामी निहित स्वार्थों द्वारा तरह–तरह के आरोप लगाए जाते रहे हैं । बदनाम करने का कोई अवसर उन्होंने नहीं छोड़ा, अश्रद्धा उत्पन्न करने के लिए जो कुछ कहा जा सकता था, जो कुछ किया–कराया जा सकता था उसमें कहीं कुछ कमी नहीं रहने दी गई है । यह सारा उत्पात उन आसुरी तत्वों का है जो अवांछनीयताओं की सड़ी कीचड़ में ही डाँस, मच्छरों की तरह अपनी जिंदगी देखते हैं । कुछ ईर्ष्यालु हैं, जिन्हें अपने अतिरिक्त किसी अन्य का यश, वर्चस्व सहन ही नहीं होता । कृतघ्नों और



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विश्वासघातियों का वर्ग इस युग में जिस तेजी से पनपा है, उतना संभवतः इतिहास में भी इससे पहले कभी भी नहीं देखा गया ।

**प्रतिबंध जो व्रतबंध जैसा महत्व रखते हैं–**

अज्ञातवास के लिए जाने से पूर्व पूज्य गुरुदेव ने सात प्रतिबंध घोषित किए थे । उनमें से कुछ प्रतिबंध सामयिक महत्व के हैं ।

युग निर्माण आंदोलन के हर सदस्य और हर शाखा का सीधा संबंध मथुरा से रहे । क्षेत्रीय प्रांतीय संगठन अलग से खड़े न किए जाएँ ।

समर्थ गुरुदीक्षा दे सकने योग्य अभी कोई अपना अनुचर हम नहीं छोड़ सके हैं । असमर्थ व्यक्ति यह महान उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठाएँगे तो उनकी कमर टूट जाएगी और जो उनका आश्रय लेगा वह टूट जाएगा । इसलिए भविष्य में गायत्री मंत्र की गुरुदीक्षा लेनी आवश्यक हो, तो लाल मशाल के प्रतीक



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को ही गुरु बनाया जाए । उस संस्कार संकल्प को कोई भी व्यक्ति करा सकेगा, पर वह स्वयं गुरु नहीं बनेगा ।

आशीर्वाद वरदान देने माँगने का सिलसिला व्यक्तिगत रूप से न चलाया जाए । ईश्वर और व्यक्ति के बीच कोई मध्यस्थ न बने । जिनमें सामर्थ्य नहीं है वे यदि वरदान आशीर्वाद का सिलसिला चलाते हैं तो यह एक ठगी ही होगी । हमारे अनुयायियों में से कोई ऐसा मिथ्या प्रलोभन लोगों को देकर उन्हें भ्रमित करने का प्रयत्न न करे ।

व्यक्तिगत रूप से कोई दान–दक्षिणा न ले । जिन्हें आवश्यकता है वे संघ के माध्यम से लें और जिन्हें देना हो वे व्यक्ति को न देकर संघ को दें । इस प्रथा से भिक्षा वृत्ति, परिग्रह, दीनता, तंगी आदि अनेक दृष्टिप्रवृत्तियाँ पनपने से रुक जाएँगी ।

उपरोक्त प्रतिबंध पूज्य गुरुदेव की



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लेखनी से लिखे गए हैं । उनका एक-एक वाक्य मर्मपूर्ण, चिंतन एवं मनन करने योग्य है । सामान्य दृष्टि से ये निषेधात्मक प्रतिबंध हैं, लेकिन बारीकी से देखा जाए तो प्रगति के विधेयात्मक सूत्र हैं ।

**गुरुवर की धरोहर पुस्तक में लिखा है कि-**

आप हमारी वंश परंपरा को जानिए और हम मरने के बाद जहाँ कहीं भी रहेंगे भूत बनकर देखेंगे । हम देखेंगे कि जिन लोगों को हम पीछे छोड़कर आए थे, उन्होंने हमारी परंपरा को निबाहा है और अगर हमको यह मालूम पड़ा कि इन्होंने हमारी परंपरा नहीं निबाही और इन्होंने व्यक्तिगत तानाबाना बुनना शुरू कर अपनी व्यक्तिगत यश कामना और व्यक्तिगत धन संग्रह करने का सिलसिला शुरू कर दिया, व्यक्तिगत रूप से बड़ा आदमी बनना शुरू कर दिया, तो हमारी आँखों से आँसू टपकेंगे



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और जहाँ कहीं भी हम भूत होकर के पीपल के पेड़ पर बैठेंगे वहाँ जाकर के हमारी आँखों से जो आँसू टपकेंगे, आपको चैन से नहीं बैठने देंगे । और मैं कुछ कहता नहीं हूँ आपको हैरान कर देंगे हैरान । आपको भी चैन नहीं मिलेगा । **अगर हमको विश्वास देकर विश्वासघात करोगे तो मेरा शाप है** आपको कि आपको चैन नहीं मिलेगा कभी भी और न आपको यश मिलेगा न आपको ख्याति मिलेगी, न उन्नति होगी, आपका अधःपतन होगा, आपका अपयश होगा और आपकी जीवात्मा आपको मार डालेगी । आप यह मत करना, अच्छा ।

मुझे अपने मन की बात कहनी थी सो मैंने कह दी । अब करना आपका काम है कि इन बताई हुई बातों को किस हद तक काम में लें और कहाँ तक चलें । मालूम नहीं आप इन्हें कार्य रूप में लाएँगे



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

या नहीं । यदि लाएँगे तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी ।

**अखण्ड ज्योति सितंबर १९८६ में लिखा है–**

शराबी, जुआरी, व्यभिचारी आदि जिनसे संपर्क साधते हैं, उन्हें अपने जैसा बना लेने में सहज सफलता प्राप्त कर लेते हैं । महापुरुषों के संबंध में भी यही बात है । बुद्ध, गाँधी आदि को अपने साथी सहयोगियों का विशाल समुदाय मिल गया था । सामर्थ्यवान व्यक्ति भले हों या बुरे, चुंबक की तरह अपने जैसे गुण–स्वभाव के लोगों को खोज–खोज कर एकत्रित कर लेते हैं । वे उनके सच्चे साथी और सहयोगी भी सिद्ध होते हैं । इतिहास के पृष्ठ इसके साक्षी हैं । इसके विपरीत यह भी देखा गया है कि जिनका पोल भरा ढकोसला ही आधार है, उनका दूसरों पर कोई प्रभाव छोड़ना तो दूर, अपने साथियों से भी बहुत दिन तक पटरी नहीं



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खाती । वे तनिक सी बातों पर आपस में लड़–झगड़ बैठते हैं और हिंस्र पशुओं की तरह एक–दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं । जिस प्रकार चोर पैसे के मामले में आपस में टकराते रहते हैं, उसी प्रकार नेता लोग भी प्रतिष्ठा एवं प्रशंसा बटोरने की आपाधापी में एक–दूसरे से आगे निकलना चाहते हैं । पुत्रेष्णा, वित्तेषणा तो किसी प्रकार काबू में रखी जा सकती है, पर सस्ती कीमत में मिलने वाली लोकेषणा ऐसी है, जिसका लोभ सँभाले सँभलता । कारगर और प्रतिष्ठित संस्थाओं का सर्वनाश इसी एक कारण से हुआ है कि उनमें महत्वाकांक्षी लोग आपस में पटरी नहीं बिठा सके ।

**अखण्ड ज्योति सितंबर १९८६ में लिखा है–**

एक चीज हमारे मन में है । उसे लेने वाला कोई हो, ऐसा जी ललचाता है । गाय थनों में दूधे भरे फिरती है और उन्हें खाली



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करने के लिए बच्चे रँभा–रँभाकर खोजती और पुकारती है । हमारे पास कुछ ऐसा भी है, जो उच्चस्तरीय है और हमारे मार्गदर्शक ने समूची अनुकंपा समेटकर हमें दी है । उसे साथ लेकर नहीं मरना चाहते, वरन् यह चाहते हैं कि उस पारसमणि का प्रियजन भी लाभ उठावें, जो हमें सौभाग्यवश मिली है । यह स्वाति बूँद की तरह बरसी और नगण्य–सी सीप के पेट से बहुमूल्य मोती उगाने में समर्थ हुई है ।

यह दैवी अनुग्रह–''नेतृत्व'' है । हमें एक समग्र नेता के रूप में जीवन–यापन करने का अवसर मिला है । अपने अंतःकरण को मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार को हमने ऐसी दिशा दी है, जिसके सहारे व्यक्तित्व को ब्राह्मणोचित बनने का, ब्राह्मी संपदा से लद जाने का अवसर मिला है । अपने आपे का, वैभव, वर्चस्व और साधनों का हमने उच्चस्तरीय



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उपयोग किया है । एक शब्द में हम अपने आपके नेता बनकर जिए हैं ।

सिंह, हाथी अपनी शक्ल–सूरत व सामर्थ्य वाले बच्चे जनते हैं । हमारी आंतरिक अभिलाषा एक ही है कि जो हमें अपना समझते हैं, जिन्हें हम अपना समझते हैं, वे युग नेतृत्व करें । अपने आपको आदर्शों के राजमार्ग पर चलाएँ और नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक क्षेत्र में प्रगतिशीलता की क्रिया–प्रक्रिया अपनाएँ । समर्थ नाविक की तरह अपनी मजबूत पतवार वाली नाव पर बिठाकर स्वयं पार हों, अन्यान्य असंख्यों को पार लगाएँ, ऊँचा उठाएँ और ऐसा वातावरण बनाएँ, जिससे सर्वत्र वसंत–सुषमा बिखरी दृष्टिगोचर हो ।

**अखण्ड ज्योति अगस्त १९९८ में लिखा है–**

**खरे सोने की ही पूरी कीमत उठती है भले ही उसे स्वर्ण विक्रेता की दुकान**



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर क्यों न ले जाया जाए । खोटे सिक्के हर जगह दुत्कारे जाते हैं, उनकी असलियत तो अंधा भिखारी भी अनुमान लगाने भर से जान लेता है । बड़े कामों के लिए बड़ी हस्तियाँ ही अभीष्ट होती हैं । इक्कीसवीं सदी के साथ एक से एक बढ़कर वजनदार और महत्वपूर्ण कार्य जुड़े हैं । उन्हें संपन्न करने के लिए मनोबल के धनी और चरित्र बल में मूर्धन्य स्तर के व्यक्ति ही चाहिए । तलाश उन्हीं की हो रही है । प्रतिभा परिष्कार का अभियान इसी दृष्टि से चलाया जा रहा है । उस परिष्कार से तप कर निकले हुए व्यक्ति न केवल अपने अग्रगामी वरिष्ठ जनों में गिने जाने योग्य बनेंगे, वरन् दूसरों को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने में भी अपनी विशिष्टता का परिचय दे सकेंगे । अगले दिनों ऐसे ही बहुमूल्य मणि मुक्तकों की आवश्यकता पड़ेगी । उनकी खोज करने के



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रयास इन्हीं दिनों अति तीव्र किए जाने की आवश्यकता है ।

**अखण्ड ज्योति मार्च १९९४ में लिखा है–**

कैसे कार्यकर्ता गुरुदेव चाहते थे व कैसा आदर्श सृजन तंत्र के एक सिपाही का होना चाहिए, इसका एक नमूना वह परिपत्र है जो पूज्यवर ने ''अध्यात्म क्षेत्र की वरिष्ठता विनम्रता पर निर्भर'' नाम से समस्त कार्यकर्ताओं को संबोधित कर १९८०–८१ में लिखा था–''सेवाधर्म के साथ शालीनता का समन्वय रहना चाहिए। लोकसेवी को निस्पृह एवं विनम्र होना चाहिए। इसी में उसकी गरिमा एवं उज्ज्वल भविष्य की संभावना है। जो बड़प्पन लूटने, साथियों की तुलना में अधिक चमकने–उछलने का प्रयत्न करेंगे, वे औंधे मुँह गिरेंगे और अपने दाँतों को तोड़ लेंगे।''

''.....संस्थाओं के विघटन में पदलोलुपता ही प्रधान कारण रही है।'' .....युग शिल्पियों



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को समय रहते इस खतरे से बचना चाहिए। हममें से एक भी लोकेषणा–ग्रस्त बड़प्पन का महत्वाकांक्षी न बनने पाए।''–''स्मरण रहे अधिक वरिष्ठ व्यक्ति अधिक विनम्र होते हैं। फलों से डालियाँ लद जाने पर आम का वृक्ष धरती की ओर झुकने लगता है। अकड़ते तो पतझड़ के डंठल हैं।''

**वाङ्मय ६६ में पृष्ठ २.१० पर लिखा है कि–**

कुढ़न एक ऐसी बीमारी है जिसका कोई इलाज नहीं, अपनी स्थिति को दूसरों की तुलना में हीन मानकर कितने ही व्यक्ति असंतोष से कुढ़ते रहते हैं । पुरुषार्थ के अभाव में प्रयत्नपूर्वक वे उस ऊँची स्थिति तक पहुँचने का साहस तो करते नहीं, उल्टे जो आगे बढ़े हुए हैं उनसे ईर्ष्या करने लगते हैं । उन्हें लगता है कि यदि आगे बढ़े हुए की टाँग पकड़कर पीछे घसीट लिया जाए या आगे बढ़ने से रोक दिया जाए, तो विषमता की



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्थिति दूर हो सकती है । ईर्ष्या में यही भाव छिपा रहता है । दूसरों की प्रशंसा या प्रगति सहन न कर सकने में ईर्ष्यालु की महत्वाकांक्षा छिपी रहती है । वह अपने से बड़े समझे जाने वालों की तुलना में अपने को हीन समझा जाना पसंद नहीं करता । इस कमी को प्रयत्न और पुरुषार्थ द्वारा स्वयं उन्नति करके पूरा किया जा सकता है, पर इस कठिन मार्ग पर चलने की अपेक्षा लोग यही ठीक समझते हैं कि आगे बढ़े हुए को पीछे घसीटा जाए, उनकी निंदा की जाए या हानि पहुँचाई जाए । ईर्ष्यालु लोग ऐसा ही कुछ किया करते हैं । कुछ आगे बढ़े हुए लोग अपने से छोटों को बढ़ते देखना नहीं चाहते । वे सोचते हैं यदि बढ़कर मेरी बराबरी में आ जाएँगे, तो फिर मेरी क्या विशेषता रहेगी ? इसलिए बढ़ते हुओं को ऊपर उठने से पहले ही दबा देना चाहिए ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इन द्वेष–वृत्तियों का परित्याग करके यदि मनुष्य अपने अंदर सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने में लग जाए तो उसकी दुनियाँ आज की अपेक्षा कल दूसरी ही हो सकती है । **दृष्टिकोण के बदलने से दृश्य बदलते हैं । नाव के मुड़ने से किनारे पलट जाते हैं ।** हमें इस प्रकार का सुधार आप में निरंतर करते रहना चाहिए । सुधार के लिए हर दिन शुभ है उसके लिए कोई आयु अधिक नहीं ।

लोग दूसरों को मिटाकर, दूसरों को नुकसान पहुँचाकर, उनकी नुकताचीनी करके बड़े बनने का स्वप्न देखते हैं, उनका असफल होना निश्चित है । यदि ऐसे व्यक्तियों को प्रारंभिक दौर में कुछ सफलता मिल जाए, तो अंततः उन्हें असफल ही होना पड़ेगा ।

**वाङ्मय ६४ में पृष्ठ ४.१५ पर लिखा है कि–**

किसी भी क्षेत्र में पाई हुई शक्ति, पद अथवा प्रतिष्ठा होती तो अपने ही हाथ में है,



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसका आवश्यकता भर व्यक्तिगत रूप में उपयोग भी किया जा सकता है तथापि यह कभी न भूलना चाहिए कि उस पर अंततः अधिकार समाज का ही है । उसे उसके लाभ से वंचित रखकर केवल अपने तक सीमित कर लेने का हमें कोई अधिकार नहीं है और यदि हम ऐसा करते हैं, तो गलती करते हैं, अनधिकार चेष्टा करते हैं, जिसका दंड हमें अधिकार–वंचना के रूप में किसी समय भी मिल सकता है ।

हम जिएँ । खूब हँसी–खुशी और आनंदपूर्वक जिएँ, यह ठीक भी है और इसका हमें अधिकार भी है । तथापि हमें अपनी हँसी–खुशी में दूसरों को भी भाग लेने देना चाहिए । हम तो आमोद–प्रमोद और आनंद–मंगल मनाते चलें और हमारे आस–पास का समाज दुःख के आँसुओं से भीगता रहे, तो हमारी हँसी–खुशी एक सामाजिक अपराध है । हमें



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने व्यक्तिगत आमोद–प्रमोद में इस सीमा तक नहीं डूबा रहना चाहिए कि आस–पास का क्रंदन ही सुनाई न दे । आस–पास के क्रंदन के बीच जो उपेक्षा–भाव से खुशियाँ मनाता रहता है, तो क्रूर पाशविक वृत्ति शीघ्र ही उसकी सारी हँसी–खुशी छीन लेगी । हँसी–खुशी तो उसी की स्थाई और सुरक्षित रह पाती है, जो अपने साथ दूसरों को भी उसमें भागीदार बनाकर मंगल मनाया करता है ।

**वाङ्मय ६८ में पृष्ठ १.११ पर लिखा है कि–**

हर रोज चिट्ठियाँ आती हैं, शाखाओं में मारकाट–मारकाट । मुझे मैनेजर बनाइए, इस मैनेजर को निकालिए । हमने शाखा तथा शक्तिपीठें इसलिए नहीं बनाई थीं, देवता को इसलिए नहीं बैठाया था कि लोगों का अहंकार बढ़े । हमने ट्रस्टी इसलिए नहीं बनाया था कि इसे बरबाद करो । हमने स्वयं गलती की इन लोगों को मालिक, ट्रस्टी बनाकर, इनके



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अहंकार एवं स्वार्थपरता को आगे बढ़ाकर । अब पंचायत समिति में जिस प्रकार झगड़े होते हैं, हमारी शक्तिपीठों में भी हर जगह चांडालपन है, हमें क्या दीखता नहीं ? क्या हमने शक्तिपीठें इसीलिए बनाई थीं, पूजा इसीलिए प्रारंभ की थीं, इसलिए संगठन बनाया था कि आप लोग अहंकारी बन जाइए और आपस में ही एक–दूसरे की टाँग खिंचाई कीजिए । आप ऐसी पूजा को बंद कीजिए । पूजा मत कीजिए, पर यह घटियापन बंद कीजिए । आप नास्तिक हो जाइए, भले ही, पर आप इसी तरह के संगठन बनाना बंद कर दीजिए । आप शक्तिपीठों को बनाना बंद कर दीजिए ।

यहीं हम एक बात अवश्य कहेंगे कि आप आध्यात्मिकता के मौलिक सिद्धांतों को समझिए । पूजा को पीछे हटाइए, आध्यात्मिकता के मौलिक सिद्धांतों को



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समझिए । आप यह मत सोचिए कि गुरुजी ने चौबीस–चौबीस लाख का जप किया था । नहीं, हम और चौबीस लाख के जप करने वालों का नाम बता सकते हैं । जो आज बिल्कुल खाली एवं छूँछ हैं । जप करने वाले कुछ नहीं कर सकते हैं, हम ब्राह्मण की शक्ति, संत की शक्ति जगाना चाहते हैं । आप राम का नाम लें या न लें । अब तो मैं यहाँ तक कहता हूँ कि अब माला जप करें या न करें, एक माला जप करें या ८१ माला जप करें, परंतु मुख्य बात यह है कि आप अपने ब्राह्मणत्व को जगाइए । प्याऊ को कौन चलाएगा ? हनुमान चालीसा पाठ करने वालों ने कितनों का भला किया है । ब्राह्मण की वाणी में, संतों की तपस्या में बल होता है । आप पूजा का महत्व बढ़ाते हैं । ख़बरदार ब्राह्मणत्व का महत्व बढ़ाइए, संतों का महत्व बढ़ाइए । अध्यात्म इन लोगों के द्वारा ही टिका हुआ है ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आपके पास बैंक में धन जमा नहीं है, तो चैक कैसे काट सकते हैं । आपकी बैंक में पूँजी होनी चाहिए । पहले जमा तो कीजिए कुछ । केवल पूजा से ही काम चलने वाला नहीं है । हमारी सबसे बड़ी पूजा समाज की सेवा है । हमने लाखों आदमियों की ही नहीं, वरन् सारे विश्व की सेवा की है । हमने अपनी अक्ल, धन, अनुष्ठान, वर्चस् सभी इसी में लगाया है ।

आप अकेले चलें । हमारे गुरु अकेले चले हैं । हम अकेले चले हैं । आप भी अकेले चलिए । संगठन के फेर में मत पड़िए । आपको बोलना नहीं आता है । आप कहते हें कि व्याख्यान सिखा दीजिए । आप हैं कौन ? हमें बतलाइए । भाषण से क्या होगा ? आप हमारी बात मानिए । आपको बोलना नहीं आता है, तो हम क्या करें ? आप पोस्टमैन का काम करिए । हम बोलना सिखा देंगे । लड़कियों



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को सिखा दिया था । महाराज जी हमें भी बोलना सिखा दीजिए । आप त्याग करके तो हमें बतलाइए । जवाहरलाल नेहरू एवं शास्त्री जी को गाँधी जी ने खादी बेचने को कहा था । वे घर–घर जाकर खादी बेचते थे । घर–घर धकेल गाड़ी लेकर जाते थे तथा लोगों से कहते थे कि आप खादी पहनिए, तो क्या वे खादी बेचते थे ?-हाँ, बेटे ! खादी बेचते थे ।

आप अपने आप को निचोड़िए । ये हमारा बेटा, यह हमारी पत्नी । देखना यही तुझे ऐसा मारेंगे कि तुझे याद रहेगा । हमारा बेटा, हमारी पत्नी–यही रटता रहेगा कि कुछ समाज के लिए, भगवान के लिए भी करेगा । नहीं गुरुजी हम तो हनुमान चालीसा पढ़ते हैं, गायत्री चालीसा पढ़ते हैं । अरे स्वार्थी कहीं का, तेरी तो अक्ल खराब हो गई है । अहंकार बढ़ गया है । हमने आप में से हर



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसी को कहा है कि आप ब्राह्मण बनिए । नहीं, गुरुजी, हमने तो चंदा इकट्ठा कर लिया, तो हम क्या करेंगे इसका ? आप आदमी तो बनें, पहले आप आदमी बनना सीखें । आप घटियापन छोड़िए, सुबह से शाम तक काम कीजिए । पात्रता बढ़ाइए ।

ऋषियों ने अपने रक्त को एक घड़े में भरा था, जिससे सीताजी उत्पन्न हुई थीं । आपको भी संस्कृति की सीता की खोज करनी है । समाज के लिए, संस्कृति के लिए आप भी अपना समय, अपना पैसा निकालिए, अपना रक्त निकालिए । आप अपने आप को निचोड़िए तो सही । निचोड़ने के नाम पर अँगूठा दिखाते हैं, त्याग के नाम पर जीभ निकालते हैं । बकवास के नाम पर, घूमने के नाम पर बिना मतलब के आडंबर बना रखे हैं । अपने आप को निचोड़िए । आप अपने को यदि निचोड़ेंगे, तो फिर देख लेना आप क्या



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बन जाते हैं ? हमने अपने आपको निचोड़ा, तो देखिए क्या बन गए ?

अगर आपने अपने आपको निचोड़ दिया, तो हमारा एक काम जरूर करना और वह यह कि हमारे विचार–हमारी आग को लोगों तक पहुँचाना । हम लेखक नहीं हैं । हमारे लिखे शब्दों में से आग निकलती है । विचारों की आग, भावनाओं की क्रांति की आग निकलती है । आज जनता भी प्यासी है, हम भी प्यासे हैं । हमारी विचारधारा ही आग है । हम आग उगलते हैं । हम लेखक नहीं हैं । हमारी लेखनी में से आग निकलती है, आग, मस्तिष्क में से निकलती है आग, हमारी आँखों में से निकलती है आग । हमारी विचारणा की आग, भावनाओं की आग, संवेदनाओं की आग को आप घर–घर पहुँचाइए ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

**वाङ्मय ६८ में पृष्ठ १.१२ पर लिखा है कि–**

आप जाइए एवं हमारा साहित्य पढ़िए तथा लोगों को पढ़ाइए और हम क्या कहना चाहते थे । हम दो ही बात आपसे कहना चाहते हैं–पहली हमारी आग को घर–घर पहुँचाइए, दूसरी ब्राह्मण एवं संत को जिंदा कीजिए, ताकि हमारा प्याऊ एवं अस्पताल चल सके, ताकि लोगों को, अपने बच्चों को खिला सकें तथा उन्हें जिंदा रख सकें तथा मरी हुई संस्कृति को जिंदा कर सकें । आप ११ माला जप करते हैं–आपको बहुत–बहुत धन्यवाद । यह जादूगरी नहीं है। किसी माला में कोई जादू नहीं है । मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि मनोकामना की मालाएँ, जादूगरी की माला में आग लगा दीजिए, आप मनोकामना की माला, जादूगरी की माला, आज्ञाचक्र जाग्रत करने की माला को पानी में बहा दीजिए ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो क्या करें महाराज जी ? आप अपने ब्राह्मणत्व को जगा दीजिए, साधु को जगा दीजिए ताकि आप अपनी नाव स्वयं पार कर सकें अन्यथा हम यही कहेंगे कि शायद हमारा तप कम है, नहीं तो कहीं न कहीं हमें ब्राह्मण, साधु मिल ही जाते । आपके पास धन नहीं, तो अपनी भावना, विचार, श्रद्धा तो समाज में बिखेर ही सकते हैं । वही बिखेरिए, संत बनकर अपना परिचय दीजिए । संत दानी होता है, संत उदार होता है ।

आपके श्रम, समय, धन और विचारणा–भावना की समाज को जरूरत है, संस्कृति को जरूरत है । इसे विलासिता में खर्च मत कीजिए । अगर किसी में ब्राह्मणत्व एवं संत जिंदा है, तो उसे निचोड़िए । उसे आप बिखेर दीजिए । हमने प्रार्थना की है कि यदि आप लोगों में कहीं भी किसी भी कोने में यदि ब्राह्मणत्व या संत जिंदा हो, तो वह जग जाए ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपासना–साधना के नाम पर आप जादूगरी बंद कीजिए । देवता को गुमराह करने वाली, मनोकामना सिद्ध करने वाली पूजा बंद कीजिए ।

साधना किसे कहते हैं, आपको मालूम नहीं ? आप हनुमान जी की पूजा करते हैं, संतोषी माता की पूजा करते हैं । यह मंत्र है, न यंत्र है, न पूजा है । आप हनुमान जी या संतोषी माता को साधते हैं । अरे पहले अपने आपको तो साधिए न, पर यह जो जादूगरी आप करते हैं, वह बदमाशी के सिवा और कुछ नहीं है । अगर आप पूजा–उपासना करते हैं, तो ठीक, यह आपकी मर्जी है, पर यह न तो कोई मंत्र जप है, न भजन है, यह मात्र धूर्तगीरी है । पूजा के नाम पर यदि आप ऐसी बदमाशी करते हैं, तो आपकी मर्जी, पर इससे कुछ होने वाला नहीं है । पहले आप समर्पण करना सीखिए ।



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हमारे गुरुजी की यही मर्जी है कि हम आप में से हर आदमी में से ब्राह्मण तथा संत जिंदा करें और हम यहीं चाहते हैं कि अगर हमारे अंदर बल हो, तो वह जिंदा हो जाए ।

**वाङ्मय २८ के पृष्ठ ८.५ में लिखा है–**

बड़ा, उससे बड़ा, सबसे बड़ा बनने की ललक इतनी मदांध हो जाती है कि न न्याय सूझता है, न औचित्य और न परिणाम, न मर्यादाओं का ध्यान रहता है और न नम्रता सधती है । बैल बनने की प्रतिस्पर्द्धा में एक मेढ़क अपने पेट में हवा भरता चला गया और अंत में उदर कलेवर फट जाने पर बेमौत मरा। वह कहानी मनुष्यों पर भी लागू होती है । जितनी जल्दी बन पड़े, जितना अधिक बटोरना संभव हो उतना बिना प्रतीक्षा किए, बिना मूल्य चुकाए, किसी भी छल, छद्म से अपने लिए उपलब्ध कर लिया जाए । यही है सेवा मार्ग पर चलने वालों



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की दुर्गति बनाने वाली ललक, भावनात्मक अवगति ।

उपदेश इन दिनों प्रायः सर्वथा असफल इसी कारण हो रहे हैं कि उपदेशक जो दूसरों से कराना चाहते हैं, उसे निजी जीवन में समाविष्ट करके यह सिद्ध नहीं कर पाते कि जो कहा गया है, वह व्यावहारिक भी है । यदि उचित, व्यावहारिक और लाभप्रद रहा होता, तो उपदेशों के अनुरूप प्रवक्ता ने सर्वप्रथम उस विधा को अपनाकर अपने को लाभान्वित किया होता । इस संदेह–असमंजस का निराकरण न कर पाने पर ही उपदेशकों के द्वारा बार–बार दिए जाने वाले भाषण भी विडंबना बनकर रह जाते हैं, श्रवण कर्त्ताओं के गले नहीं उतरते ।

बड़प्पन हर क्षेत्र में मँहगा पड़ता है । धन, विद्या, सौंदर्य, पद आदि के क्षेत्रों में जो अपने को बड़ा सिद्ध करना चाहते हैं, उन्हें



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तरह–तरह के आडंबर खड़े करके यह प्रकट करना होता हैं कि उनके पास यह विशेषताएँ हैं । लोग उसे देखें, समझें और सराहें । फैशन, ठाट–बाट जैसे खर्चीले सरंजाम इसी विज्ञापनबाजी के लिए किए जाते हैं, ताकि देखने वालों की आँखें उन पर जम जाएँ । यही अनाचरण यश लोलुपों को भी अपनाना पड़ता है ।

विनम्र स्वयंसेवक की तरह जिन्हें अपनी श्रम साधना, परमार्थ परायणता के आधार पर मिलने वाले आत्म संतोष को ही पर्याप्त मानने की विवेक दृष्टि रहती है, वे अनचाहा यश पाते हैं । उन्हें वह गहरा स्नेह, सद्भाव प्राप्त होता है जिसके साथ साथियों, परिचितों का विश्वास और सहयोग प्रचुर मात्रा में जुड़ा रहता है । दूरदर्शिता इसी में है कि लोकसेवी सच्चे मन से यश, पद लोलुपता, अहंता छोड़ें । विनम्रता अपनाएँ । दूसरों को आगे रखें । स्वयं पीछे



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहें । अपना बखान स्थगित करें । अपना जीवन उच्च विचार के सिद्धांत में आस्था रखने वाले अपने दृष्टिकोण, चरित्र व्यवहार में अधिकाधिक शालीनता भरते और महानता के उच्च पद पर अपनी विशेषता के कारण जा पहुँचते हैं ।

## आत्मीय अनुरोध

अब साहित्य के माध्यम से विचार फैलाने वाले परिजनों की भीड़ से हम प्राणवान परिजनों की छँटनी करना चाहते हैं । हमें ऐसे १०,००० हीरों की तलाश है, जो चार रुपए मूल्य वाली महाकाल की नवीन सीरीज की सभी पुस्तकों को धीरे–धीरे यथाशक्ति एक–एक हजार मँगाने के लिए तत्पर हों । ऐसे परिजनों को हम **ज्ञानयज्ञ प्रचारक** कहेंगे ।

**क्या करें ? कैसे करें ?**

( १ ) जो परिजन ज्ञानयज्ञ प्रचारक का दायित्व उठाने को तत्पर हों, वे यहाँ पत्र



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

डालकर संकल्प पत्र मँगा लें । भर भेज दें तथा ३०००) + ५०) माल भेजने का भाड़ा कुल ३०५०) रुपए ड्राफ्ट द्वारा युग निर्माण योजना, मथुरा–३ के नाम भेज दें, ताकि १००० पुस्तकें भेजी जा सकें ।

( २ ) निकटवर्ती ट्रांसपोर्ट का नाम व पूरा पता भी भेज दें, क्योंकि १००० पुस्तकें अनिवार्य रूप से ट्रांसपोर्ट से ही भेजी जाएँगी ।

( ३ ) सभी शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ, शाखा, महिला मंडल सामूहिक रूप से भी ज्ञान यज्ञ प्रचारक बन सकते हैं । जो प्राणवान व निष्ठावान परिजन व्यक्तिगत रूप से ज्ञान यज्ञ प्रचारक बनेंगे, हम उनका हार्दिक अभिनंदन करेंगे ।

( ४ ) ऐसे परिजन जो एक–एक हजार पुस्तकें मँगाकर फैलाने में असमर्थ हों, तो ३००) + ३०) डाक व्यय कुल ३३०)



Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रुपए भेज कर प्रत्येक १००–१०० पुस्तकें महाकाल सीरीज की मँगाने का दायित्व तो प्रत्येक गायत्री परिजन को उठाना ही चाहिए ।

( ५ ) ऐसे परिजन पत्र डालकर संकल्प पत्र मँगा लें, भरकर भेज दें और पुस्तकें क्रमशः मँगाते रहें । उन्हें हम **ज्ञान यज्ञ सहयोगी** समझेंगे । ऐसे परिजनों के माध्यम से भी बहुत सराहनीय कार्य हो सकेगा ।

( ६ ) इन पुस्तकों को बिक्री द्वारा अथवा दानवीरों के सहयोग से उनके नाम–पते पुस्तकों के टाइटिल–२ पर छपवा कर निःशुल्क समाज में वितरित कराने का प्रयास करना चाहिए ।

**मुद्रक :** युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ.प्र.)

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

# : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

**गायत्री परिवार** जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

**Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at**
**www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org**